नवसर्जन संस्कृति

RNI No. GJHIN/25/A2786
NAVSARJAN SANSKRUTI

नवसर्जन संस्कृति

अहमदाबाद से प्रकाशित दैनिक

वर्ष : 01
अंक : 140
दि. 22.02.2026,
रविवार
पाना : 04
किंमत : 00.50 पैसा

ज्योतिष पीठ के शंकराचार्य स्वामी अविमुक्तेश्वरानंद सरस्वती के खिलाफ एफआईआर का आदेश, यौन शोषण मामले में कोर्ट का बड़ा फैसला

(जीएनएस)। प्रयागराज में स्थित एडीजे (रेप एवं पॉक्सो) स्पेशल कोर्ट ने ज्योतिष पीठ के शंकराचार्य स्वामी अविमुक्तेश्वरानंद सरस्वती और उनके शिष्य स्वामी मुकुंदानंद गिरी के खिलाफ यौन शोषण के गंभीर आरोपों के मामले में एफआईआर दर्ज करने का आदेश देकर एक महत्वपूर्ण न्यायिक हस्तक्षेप किया है। अदालत ने झूंसी थाना पुलिस को निर्देश दिया है कि आरोपों के आधार पर मुकदमा दर्ज कर विधिवत जांच शुरू की जाए। इस आदेश के बाद धार्मिक और सामाजिक जगत में हलचल तेज हो गई है और यह मामला व्यापक चर्चा का विषय बन गया है। एडीजे पॉक्सो एक्ट के विशेष न्यायाधीश विनोद कुमार चौरसिया ने अपने आदेश में स्पष्ट रूप से कहा कि उपलब्ध तथ्यों और प्रस्तुत साक्ष्यों के आधार पर प्रथम दृष्टया मामला दर्ज करने और विस्तृत जांच करने की आवश्यकता है। अदालत ने पुलिस को निर्देश दिया है कि दोनों आरोपियों के खिलाफ एफआईआर दर्ज कर निष्पक्ष और समयबद्ध जांच सुनिश्चित की जाए। कोर्ट के इस आदेश के बाद अब झूंसी थाना क्षेत्र में एफआईआर दर्ज कर आगे की कानूनी कार्रवाई शुरू की जाएगी।

यह मामला तब सामने आया जब शाकुंभरी पीठाधीश्वर और श्री कृष्ण जन्मभूमि मुक्ति निर्माण ट्रस्ट से जुड़े आशुतोष ब्रह्मचारी ने 28 जनवरी को अदालत में एक अर्जी दाखिल की थी। यह अर्जी दंड प्रक्रिया संहिता की धारा 173(4) के तहत दाखिल की गई थी, जिसमें आरोप लगाया गया था कि स्वामी अविमुक्तेश्वरानंद सरस्वती के आश्रम में

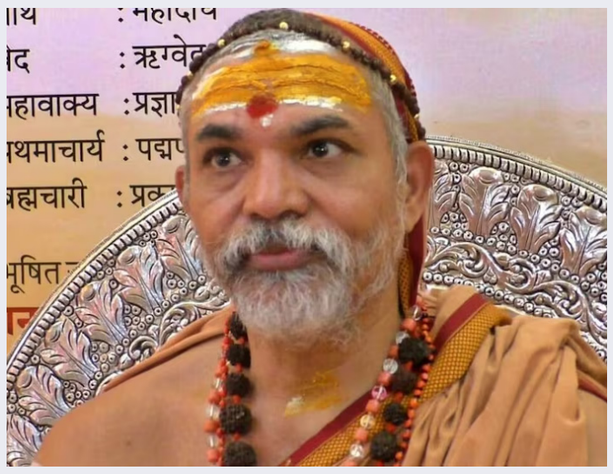

नाबालिग बच्चों के साथ यौन शोषण किया गया। आशुतोष ब्रह्मचारी ने अदालत को इस संबंध में एक सीडी भी सौंपने का दावा किया, जिसमें कथित तौर पर संबंधित घटनाओं से जुड़े साक्ष्य मौजूद हैं। अदालत ने मामले की गंभीरता को देखते हुए आरोप लगाने वाले दोनों नाबालिगों के बयान दर्ज करने का निर्देश दिया था। इसके तहत 13 फरवरी को दोनों नाबालिगों के बयान अदालत में वीडियोग्राफी के साथ दर्ज किए गए। इस प्रक्रिया का उद्देश्य यह सुनिश्चित करना था कि पीड़ितों के बयान सुरक्षित और पारदर्शी तरीके से दर्ज हों, ताकि जांच और न्यायिक प्रक्रिया में किसी प्रकार की बाधा न आए। बयान दर्ज करने और पुलिस की प्रारंभिक रिपोर्ट का संज्ञान लेने के बाद अदालत ने मामले की सुनवाई पूरी की और फैसला सुरक्षित रख लिया था। विस्तृत विचार-विमर्श के बाद अदालत ने अब एफआईआर दर्ज करने का औपचारिक आदेश जारी किया है। यह आदेश इस बात का संकेत है कि अदालत ने आरोपों को गंभीरता से लिया है और मामले की निष्पक्ष जांच को आवश्यक माना है। कोर्ट के इस आदेश के बाद आशुतोष ब्रह्मचारी ने संतोष व्यक्त करते हुए कहा कि उन्हें न्यायपालिका पर पूरा विश्वास था और अब उन्हें न्याय मिलने की उम्मीद है। उन्होंने घोषणा की कि वह प्रयागराज से वाराणसी स्थित विद्या मठ तक 'सनातन यात्रा' निकालेंगे, जिसका उद्देश्य लोगों के सामने कथित सच्चाई को लाना है। उनका आरोप है कि विद्या मठ में ही नाबालिग बच्चों के साथ शोषण की घटनाएं हुई थीं। इस मामले के सामने आने के बाद धार्मिक और सामाजिक संगठनों में भी प्रतिक्रिया देखने को मिल रही है। कई लोग इसे एक गंभीर मामला मानते हुए निष्पक्ष जांच की मांग कर रहे हैं, जबकि कुछ लोग इसे एक संवेदनशील धार्मिक मुद्दा बताते हुए सावधानीपूर्वक जांच की आवश्यकता पर जोर दे रहे हैं। कानूनी विशेषज्ञों के अनुसार, एफआईआर दर्ज होने के बाद पुलिस मामले की विस्तृत जांच करेगी, जिसमें आरोपियों से पूछताछ, साक्ष्यों की जांच और संबंधित व्यक्तियों के बयान दर्ज करना शामिल होगा। जांच के आधार पर पुलिस अदालत में अपनी रिपोर्ट प्रस्तुत करेगी, जिसके बाद आगे की न्यायिक प्रक्रिया शुरू होगी। यदि आरोप साबित होते हैं, तो आरोपियों के खिलाफ कड़ी कानूनी कार्रवाई की जा सकती है। यह मामला इसलिए भी महत्वपूर्ण है क्योंकि इसमें एक प्रमुख धार्मिक पद पर आसीन व्यक्ति के खिलाफ गंभीर आरोप लगाए गए हैं। ऐसे मामलों में निष्पक्ष और पारदर्शी जांच अत्यंत आवश्यक होती है, ताकि न्याय सुनिश्चित किया जा सके और समाज में कानून के प्रति विश्वास बना रहे। प्रशासन और पुलिस अधिकारियों ने भी संकेत दिया है कि अदालत के आदेश का पालन करते हुए सभी आवश्यक कानूनी प्रक्रियाओं का पालन किया जाएगा। पुलिस का मुख्य उद्देश्य मामले की निष्पक्ष जांच करना और सच्चाई को सामने लाना होगा।

इस घटनाक्रम के बाद अब सभी की नजर पुलिस जांच और आगे की न्यायिक प्रक्रिया पर टिकी हुई है। अदालत के आदेश ने यह स्पष्ट कर दिया है कि कानून के सामने सभी समान हैं और किसी भी व्यक्ति के खिलाफ लगे गंभीर आरोपों की जांच निष्पक्ष और कानूनी तरीके से की जाएगी।

सूरत के चर्चित बिल्डर तुषार घेलानी सुसाइड केस में बड़ा खुलासा, महिला मित्र हिरासत में, पुलिस जांच से सामने आए चौंकाने वाले तथ्य

(जीएनएस)। देश की आर्थिक राजधानी के रूप में तेजी से उभर रहे सूरत शहर में हुए चर्चित बिल्डर तुषार घेलानी आत्महत्या मामले ने अब एक निर्णायक मोड़ ले लिया है। इस हाई-प्रोफाइल केस में उमरा पुलिस ने महत्वपूर्ण कार्रवाई करते हुए घेलानी की महिला मित्र के खिलाफ आत्महत्या के लिए उकसाने का मामला दर्ज कर उसे हिरासत में ले लिया है। इस कार्रवाई के बाद शहर के रियल एस्टेट जगत, कारोबारी समुदाय और आम नागरिकों के बीच इस मामले को लेकर नई चर्चा शुरू हो गई है। पुलिस की तकनीकी जांच और साक्ष्यों के आधार पर यह स्पष्ट संकेत मिले हैं कि लगातार मानसिक दबाव और व्यक्तिगत परिस्थितियों ने इस दुखद घटना को जन्म दिया। यह मामला 1 फरवरी 2026 को उस समय सामने आया था, जब शहर के प्रतिष्ठित बिल्डर तुषार घेलानी ने अपने ही घर में अपनी लाइसेंसी रिवॉल्वर से खुद को गोली मार ली थी। घटना के तुरंत बाद परिवार और परिचितों में हड़कंप मच गया था और उन्हें गंभीर अवस्था में अस्पताल ले जाया गया था। डॉक्टरों की टीम ने उन्हें बचाने के लिए हर संभव प्रयास किया, लेकिन सिर में गंभीर चोट के कारण उनकी स्थिति अत्यंत नाजुक बनी रही। लगभग पांच दिनों तक जीवन और मृत्यु के बीच संघर्ष करने के बाद डॉक्टरों ने उन्हें ब्रेन डेड घोषित कर दिया। यह खबर पूरे शहर के लिए एक गहरा सदमा थी, क्योंकि तुषार घेलानी न केवल एक सफल बिल्डर थे, बल्कि समाज में एक सम्मानित और प्रतिष्ठित

व्यक्तित्व के रूप में भी जाने जाते थे।

घटना के बाद से ही परिवार के सदस्यों ने इस आत्महत्या के पीछे उनकी महिला मित्र की भूमिका होने का आरोप लगाया था। परिवार का कहना था कि पिछले कुछ समय से तुषार घेलानी मानसिक तनाव और भावनात्मक दबाव से गुजर रहे थे और इसके पीछे उनकी महिला मित्र के साथ चल रहा विवाद प्रमुख कारण था। हालांकि शुरुआत में मामला काफी जटिल और पेचीदा नजर आ रहा था, क्योंकि आरोपी महिला ने भी अपनी ओर से पुलिस में शिकायत दर्ज कराई थी, जिससे जांच और अधिक संवेदनशील और जटिल हो गई थी।

उमरा पुलिस ने मामले की गंभीरता को देखते हुए अत्यंत सावधानी और तकनीकी विशेषज्ञता के साथ जांच शुरू की। पुलिस ने कॉल डिटेल रिकॉर्ड, मोबाइल मैसेज, सोशल मीडिया गतिविधियों, डिजिटल फुटप्रिंट्स और वित्तीय लेनदेन का गहन विश्लेषण किया। इन सभी साक्ष्यों के आधार पर पुलिस ने घटनाओं की पूरी श्रृंखला को समझने का प्रयास किया। जांच के दौरान कई महत्वपूर्ण तथ्य सामने आए, जिन्होंने मामले की दिशा बदल दी।

जांच का नेतृत्व कर रहे एसीपी Z. R. Desai ने बताया कि तकनीकी साक्ष्यों और डिजिटल रिकॉर्ड के आधार पर यह स्पष्ट हुआ कि महिला मित्र द्वारा लगातार बनाए गए मानसिक दबाव और व्यक्तिगत तनाव ने तुषार घेलानी को अत्यंत कमजोर स्थिति में पहुंचा दिया था। उन्होंने बताया कि इन साक्ष्यों के आधार पर महिला के खिलाफ भारतीय दंड संहिता की संबंधित धाराओं के तहत आत्महत्या के लिए उकसाने का मामला दर्ज किया गया है और उसे हिरासत में लेकर पूछताछ की जा रही है।

पुलिस सूत्रों के अनुसार जांच में यह भी सामने आया है कि दोनों के बीच पिछले कुछ महीनों से संबंधों में तनाव चल रहा था और कई बार विवाद की स्थिति भी उत्पन्न हुई थी। कॉल रिकॉर्ड और मैसेज के विश्लेषण से यह संकेत मिला कि तुषार घेलानी मानसिक रूप से अत्यधिक परेशान थे। पुलिस अब इस बात की भी जांच कर रही है कि क्या इस पूरे मामले में कोई अन्य व्यक्ति भी शामिल था या किसी और ने भी इस मानसिक दबाव को बढ़ाने में भूमिका निभाई थी।

तुषार घेलानी सूरत के रियल एस्टेट क्षेत्र का एक बड़ा नाम थे। वर्ष 1990 से वे निर्माण क्षेत्र में सक्रिय थे और अपने समूह 'घेलानी बिल्डर्स' के माध्यम से उन्होंने शहर में कई आधुनिक और लग्जरी रेजिडेंशियल प्रोजेक्ट्स विकसित किए थे। उनका मुख्य कार्यालय पार्ले पॉइंट स्थित जॉली कॉम्प्लेक्स में था और वे अपने गुणवत्ता, समयबद्ध परियोजनाओं और आधुनिक निर्माण शैली के लिए जाने जाते थे। उन्होंने सूरत के शहरी विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया था और उनके प्रोजेक्ट्स ने शहर के रियल एस्टेट मानकों को नई ऊंचाई दी थी। उनकी अचानक हुई इस दुखद घटना ने न केवल उनके परिवार बल्कि पूरे कारोबारी समुदाय को गहरा आघात पहुंचाया है। उनके सहयोगियों और परिचितों का कहना है कि तुषार घेलानी एक शांत, मेहनती और दूरदर्शी व्यक्ति थे, जिन्होंने अपने परिश्रम और समर्पण से सफलता हासिल की थी। इस घटना ने समाज में मानसिक स्वास्थ्य, व्यक्तिगत संबंधों और भावनात्मक संतुलन के महत्व पर भी गंभीर सवाल खड़े कर दिए हैं।

पुलिस की जांच अभी जारी है और अधिकारियों का कहना है कि आने वाले दिनों में इस मामले में और भी महत्वपूर्ण खुलासे हो सकते हैं। आरोपी महिला से पूछताछ के आधार पर घटनाओं की पूरी सच्चाई सामने आने की संभावना है। पुलिस यह सुनिश्चित करने का प्रयास कर रही है कि मामले की निष्पक्ष और पारदर्शी जांच हो तथा दोषियों के खिलाफ सख्त कानूनी कार्रवाई की जाए।

सूरत में टेक्सटाइल क्रांति की शुरुआत: SITEX 2026 में दुनिया की पहली फोर-ब्लेड हाई-स्पीड जैक्वार्ड मशीन लॉन्च, उद्योग को मिलेगी नई वैश्विक पहचान

(जीएनएस)। देश की टेक्सटाइल राजधानी के रूप में पहचान बना चुका सूरत एक बार फिर तकनीकी नवाचार और औद्योगिक प्रगति का केंद्र बन गया है। शहर में आयोजित SITEX – सूरत इंटरनेशनल टेक्सटाइल एक्सपो 2026 का भव्य शुभारंभ अत्यंत उत्साह और गरिमामय वातावरण के बीच हुआ, जिसने न केवल दक्षिण गुजरात बल्कि पूरे देश के टेक्सटाइल उद्योग को नई दिशा देने का संकेत दिया है। यह तीन दिवसीय प्रदर्शनी सूरत इंटरनेशनल एग्जीबिशन एंड कन्वेंशन सेंटर, सरसाना में आयोजित की गई है, जहाँ देशभर से आए उद्योगपति, तकनीकी विशेषज्ञ, मशीन निर्माता और निर्यातक एक मंच पर एकत्र हुए हैं। प्रदर्शनी का उद्देश्य आधुनिक टेक्सटाइल मशीनरी और नई तकनीकों को उद्योग से जोड़कर उत्पादन क्षमता, गुणवत्ता और वैश्विक प्रतिस्पर्धा को मजबूत करना है। इस आयोजन का संचालन Southern Gujarat Chamber of Commerce and Industry और सदर्न गुजरात चैंबर ट्रेड एंड इंडस्ट्रीज डेवलपमेंट सेंटर द्वारा किया गया है, जिसने इसे देश के सबसे महत्वपूर्ण टेक्सटाइल मशीनरी आयोजनों में शामिल कर दिया है। SITEX का यह 13वां संस्करण है और इसमें देश के प्रमुख औद्योगिक शहरों जैसे नई दिल्ली, मुंबई, अहमदाबाद, लुधियाना, कोयंबटूर, पुणे, भीलवाड़ा और पानीपत सहित कुल 110 प्रदर्शकों ने भाग लिया है। प्रदर्शनी स्थल पर नवीनतम टेक्सटाइल मशीनों, ऑटोमेशन सिस्टम, डिजिटल प्रिंटिंग

तकनीक, एम्ब्रॉयडरी इक्विपमेंट और सर्कुलर निटिंग मशीनों का प्रदर्शन किया जा रहा है, जिससे उद्योग से जुड़े लोगों को भविष्य की तकनीकी दिशा का स्पष्ट संकेत मिल रहा है।

इस प्रदर्शनी का सबसे बड़ा आकर्षण दुनिया की पहली फोर-ब्लेड हाई-स्पीड रैपियर जैक्वार्ड मशीन का लॉन्च रहा, जिसने टेक्सटाइल उद्योग में एक नई तकनीकी क्रांति की शुरुआत कर दी है। यह मशीन अत्यधिक गति और सटीकता के साथ जटिल डिज़ाइन वाले फैब्रिक का उत्पादन करने में सक्षम है, जिससे उत्पादन की गति कई गुना बढ़ सकती है। इसके अलावा हाई-स्पीड एयरजेट मशीन का लाइव प्रदर्शन भी किया गया, जिसने यह दिखाया कि कैसे आधुनिक तकनीक के माध्यम से कम समय में अधिक उत्पादन संभव है। इन मशीनों के माध्यम से उद्योगपतियों को लागत कम करने, गुणवत्ता बढ़ाने और अंतरराष्ट्रीय बाजार की मांग के अनुरूप उत्पादन करने में सहायता मिलेगी।

उद्घाटन समारोह में उपस्थित Rajesh Gandhi, जो Vadilal Industries के चेयरमैन और Gujarat Chamber of Commerce and Industry के वरिष्ठ पदाधिकारी हैं, उन्होंने कहा कि यह प्रदर्शनी सूरत के औद्योगिक भविष्य के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। उन्होंने बताया कि भारत अब टेक्सटाइल मशीनरी के क्षेत्र में आत्मनिर्भर बनने की दिशा में तेजी से आगे बढ़ रहा है और यूरोपीय तथा जापानी तकनीक पर आधारित मशीनों का अधिकांश उत्पादन देश में संभव हो चुका है। उन्होंने यह भी कहा कि यदि उद्योग आधुनिक तकनीक और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस को अपनाता है, तो उत्पादन की गुणवत्ता और गति में अभूतपूर्व सुधार संभव है, जिससे निर्यात में भी उल्लेखनीय वृद्धि होगी।

प्रदर्शनी में उपस्थित उद्योगपतियों और व्यापारियों ने भी इस आयोजन को टेक्सटाइल उद्योग के भविष्य के लिए एक ऐतिहासिक अवसर बताया। उनका मानना है कि नई मशीनरी और तकनीक के उपयोग से उत्पादन क्षमता में वृद्धि होगी, जिससे सूरत के उद्योग को अंतरराष्ट्रीय बाजार में प्रतिस्पर्धात्मक लाभ मिलेगा। कई उद्योगपतियों ने नई मशीनों में निवेश की योजना बनाई है, जिससे आने वाले समय में रोजगार के नए अवसर भी उत्पन्न होंगे और स्थानीय अर्थव्यवस्था को मजबूती मिलेगी। प्रदर्शनी में प्रदर्शित मशीनों में ऊर्जा दक्षता और पर्यावरण संरक्षण का भी विशेष ध्यान रखा गया है, जिससे उत्पादन प्रक्रिया अधिक टिकाऊ और पर्यावरण अनुकूल बन सके।

सूरत लंबे समय से सिंथेटिक फैब्रिक, साड़ी और ड्रेस मटेरियल के उत्पादन के लिए विश्व प्रसिद्ध रहा है, लेकिन अब तकनीकी नवाचार के माध्यम से यह शहर वैश्विक टेक्सटाइल हब बनने की दिशा में तेजी से आगे बढ़ रहा है। SITEX 2026 ने यह साबित कर दिया है कि सूरत का उद्योग केवल पारंपरिक उत्पादन तक सीमित नहीं है, बल्कि यह आधुनिक तकनीक, अनुसंधान और नवाचार के माध्यम से वैश्विक प्रतिस्पर्धा में अग्रणी बनने के लिए तैयार है। इस प्रदर्शनी ने उद्योग, निवेश और तकनीकी विकास के नए द्वार खोल दिए हैं, जिससे आने वाले वर्षों में सूरत न केवल भारत बल्कि विश्व के प्रमुख टेक्सटाइल केंद्रों में अपनी मजबूत पहचान स्थापित कर सकता है।

ग्राम पंचायतों में प्रशासनिक निरंतरता सुनिश्चित करने के लिए सरपंचों को प्रशासक बनाने का ऐतिहासिक निर्णय

(जीएनएस)। राज्य के ग्रामीण प्रशासन को सुचारू और व्यवस्थित बनाए रखने के उद्देश्य से महाराष्ट्र सरकार ने एक महत्वपूर्ण और दूरगामी निर्णय लिया है। जिन ग्राम पंचायतों का कार्यकाल समाप्त हो चुका है या 28 फरवरी तक समाप्त होने वाला है, वहां वर्तमान सरपंचों को ही प्रशासक के रूप में नियुक्त करने का निर्णय लिया गया है। ग्राम विकास विभाग द्वारा जारी आधिकारिक परिपत्र के माध्यम से इस फैसले को औपचारिक रूप से लागू कर दिया गया है। इस निर्णय का मुख्य उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि ग्राम पंचायतों के प्रशासनिक कार्यों, विकास योजनाओं और जनसेवाओं में किसी प्रकार की रुकावट न आए और ग्रामीण क्षेत्रों में शासन की निरंतरता बनी रहे।

यह निर्णय ऐसे समय में लिया गया है जब राज्य की अनेक ग्राम पंचायतों का कार्यकाल समाप्त होने जा रहा है, लेकिन विभिन्न प्रशासनिक और प्रक्रियात्मक कारणों से पंचायत चुनाव समय पर संपन्न नहीं हो सके हैं। इस स्थिति में प्रशासनिक शून्यता उत्पन्न होने की संभावना थी, जिससे ग्रामीण क्षेत्रों में विकास कार्य, सरकारी योजनाओं का क्रियान्वयन और दैनिक प्रशासन प्रभावित हो सकता था। सरकार ने इस संभावित संकट को ध्यान में रखते हुए यह व्यावहारिक और त्वरित समाधान अपनाया है, जिससे पंचायतों की कार्यप्रणाली में निरंतरता बनी रह सके।

जारी सर्कुलर के अनुसार, मौजूदा सरपंचों को ग्राम पंचायतों का प्रशासक छह महीने की अवधि के लिए नियुक्त किया जाएगा। यदि इस अवधि के भीतर पंचायत चुनाव संपन्न नहीं हो पाते हैं, तो आवश्यकता के अनुसार इस कार्यकाल को आगे भी बढ़ाया जा सकता है। हालांकि, जैसे ही पंचायत चुनाव संपन्न होंगे और नए प्रतिनिधि चुने जाएंगे, प्रशासक के रूप में नियुक्त सरपंच का कार्यकाल

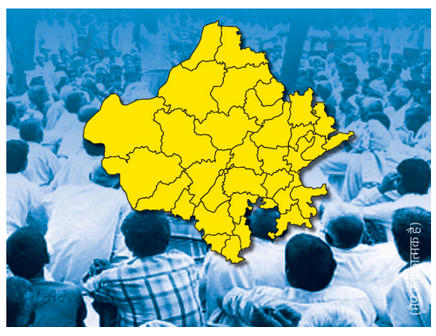

स्वतः समाप्त हो जाएगा और नई पंचायत अपने अधिकारों के साथ कार्यभार संभाल लेगी। इस व्यवस्था से प्रशासनिक स्थिरता बनाए रखने और लोकतांत्रिक प्रक्रिया के बीच संतुलन स्थापित करने का प्रयास किया गया है।

इस प्रक्रिया के तहत जिला परिषद के मुख्य कार्यकारी अधिकारी को प्रशासक नियुक्त करने का अधिकार दिया गया है। इसका अर्थ यह है कि प्रत्येक जिले में संबंधित जिला परिषद का मुख्य कार्यकारी अधिकारी ही यह सुनिश्चित करेगा कि किन ग्राम पंचायतों में सरपंचों को प्रशासक नियुक्त किया जाना है और उनकी नियुक्ति विधिवत तरीके से की जाए। यह व्यवस्था प्रशासनिक नियंत्रण और पारदर्शिता बनाए रखने के लिए महत्वपूर्ण मानी जा रही है।

सरकार ने केवल सरपंचों को प्रशासक नियुक्त करने तक ही सीमित नहीं रखा है, बल्कि पंचायतों के संचालन को और अधिक प्रभावी बनाने के लिए एक प्रशासनिक समिति के गठन का भी प्रावधान किया है। इस समिति में उपसरपंच और ग्राम पंचायत के अन्य सदस्य शामिल होंगे। यह समिति प्रशासक के साथ मिलकर पंचायत के नियमित कार्यों का संचालन करेगी और यह सुनिश्चित करेगी कि विकास योजनाएं, सरकारी परियोजनाएं और जनकल्याण कार्यक्रम बिना किसी बाधा के जारी रहें। इस समिति को संबंधित कानूनों और नियमों के तहत आवश्यक अधिकार भी प्रदान किए गए हैं, जिससे वे पंचायत के हित में निर्णय ले सकें और आवश्यक निर्देश जारी कर सकें।

इस निर्णय के पीछे सरकार की स्पष्ट मंशा यह है कि ग्रामीण क्षेत्रों में विकास की गति धीमी न पड़े और जनता को किसी प्रकार की प्रशासनिक असुविधा का सामना न करना पड़े। ग्राम पंचायतें ग्रामीण प्रशासन की सबसे महत्वपूर्ण इकाई होती हैं और इनके माध्यम से ही सरकार की अधिकांश योजनाएं जमीनी स्तर तक पहुंचती हैं। यदि पंचायतों में प्रशासनिक रिक्तता उत्पन्न होती है, तो इसका सीधा असर ग्रामीण जनता पर पड़ता है। इसलिए सरकार ने यह सुनिश्चित करने का प्रयास किया है कि प्रशासनिक व्यवस्था निरंतर बनी रहे और जनता को किसी प्रकार की समस्या का सामना न करना पड़े।

ग्रामीण क्षेत्रों में इस निर्णय का व्यापक स्वागत किया जा रहा है। कई सरपंचों और पंचायत सदस्यों ने इस फैसले को व्यावहारिक और आवश्यक कदम बताया है। उनका कहना है कि इस निर्णय से विकास कार्यों में निरंतरता बनी रहेगी और पंचायत स्तर पर चल रही योजनाएं बाधित नहीं होंगी। इसके साथ ही ग्रामीण नागरिकों को भी सरकारी सेवाओं और योजनाओं का लाभ मिलता रहेगा।

हालांकि, इस फैसले के साथ ही ग्रामीण क्षेत्रों में शीघ्र पंचायत चुनाव कराने की मांग भी तेज हो गई है। कई सामाजिक संगठनों और नागरिकों का मानना है कि लोकतांत्रिक व्यवस्था में चुनाव की प्रक्रिया समय पर पूरी होना आवश्यक है और सरकार को जल्द से जल्द पंचायत चुनाव आयोजित करने चाहिए, ताकि जनता अपने प्रतिनिधियों का चयन कर सके। लोकतंत्र की मजबूती के लिए चुनाव प्रक्रिया का समय पर संपन्न होना अत्यंत महत्वपूर्ण माना जाता है।

विशेषज्ञों का मानना है कि यह निर्णय प्रशासनिक दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण है, क्योंकि इससे प्रशासनिक निरंतरता बनी रहेगी और विकास कार्य प्रभावित नहीं होंगे। साथ ही, यह व्यवस्था एक अस्थायी समाधान के रूप में कार्य करेगी, जब तक कि पंचायत चुनाव संपन्न नहीं हो जाते। इस व्यवस्था से पंचायतों के वित्तीय और प्रशासनिक कार्यों में पारदर्शिता और निरंतरता सुनिश्चित की जा सकेगी।

यह निर्णय ग्रामीण प्रशासन की स्थिरता और विकास की निरंतरता सुनिश्चित करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम माना जा रहा है। इससे यह स्पष्ट होता है कि सरकार ग्रामीण क्षेत्रों के प्रशासन को मजबूत बनाए रखने और जनता के हितों की रक्षा करने के लिए प्रतिबद्ध है। आने वाले समय में पंचायत चुनाव संपन्न होने के बाद यह व्यवस्था समाप्त हो जाएगी और नई पंचायतें अपने कार्यभार के साथ लोकतांत्रिक प्रक्रिया को आगे बढ़ाएंगी। इस बीच, मौजूदा सरपंच प्रशासक के रूप में अपनी जिम्मेदारी निभाते हुए यह सुनिश्चित करेंगे कि ग्राम पंचायतों का प्रशासन सुचारू रूप से चलता रहे और ग्रामीण विकास की प्रक्रिया निरंतर जारी रहे। यह निर्णय ग्रामीण प्रशासन की स्थिरता, विकास और जनता के हितों की रक्षा के लिए एक महत्वपूर्ण और आवश्यक कदम के रूप में देखा जा रहा है।

संपादकीय

फर्जी दावे से राष्ट्रीय प्रतिष्ठा को आंच

दिल्ली में आयोजित, भारत की महत्वाकांक्षी वैश्विक एआई समिट की शुरुआत में एक प्राइवेट यूनिवर्सिटी द्वारा विदेशी रोबोट को अपनी खोज बताकर किए दावे ने देश को असहज किया। ग्लोबल साउथ के देशों का नेतृत्व कर रहे भारत की तरक्की को लेकर अकसर मीन-मेख निकालने वाले पश्चिमी मीडिया को ग्रेटर नोएडा स्थित गलगोटिया यूनिवर्सिटी के कृत्य ने नुक्ताचीनी का एक और मौका जरूर दे दिया। जिसको लेकर पश्चिमी मीडिया में खासी चर्चा हुई। यहां एक निष्कर्ष यह भी निकला कि तकनीकी शिक्षा में निजी क्षेत्रों को मौका मिलने का किस हद तक दुरुपयोग भी किया जा सकता है। यह भी कि मौलिक गुणवत्ता से समझौता करके हम देश का कैसा भविष्य तैयार कर रहे हैं। यह घटनाक्रम देश में तेजी से बढ़ती उस नकारात्मक प्रवृत्ति का हश्र भी बताता है, जिसमें आनन-फानन में शॉर्टकट से सफलता की तलाश रहती है। विडंबना यह है कि इस घटना ने वैश्विक एआई सम्मेलन के परिप्रेक्ष्य में कई सवाल पैदा किये। सवाल उठाया कि भारत आज व्यवहार में एआई व रोबोटिक्स के अनुसंधान में कहां खड़ा है? आखिर गलगोटिया यूनिवर्सिटी के नीति-नियंताओं ने यह क्यों नहीं सोचा कि चीन निर्मित एक रोबोट को अपनी उपलब्धि बताने से देश की प्रतिष्ठा को आंच आएगी? अब यूनिवर्सिटी की तरफ से सफाई दी जा रही है कि उसने रोबोट के निर्माण का दावा नहीं किया। वहीं दूसरी ओर उन सरकारी अधिकारियों की भी जवाबदेही तय की जानी चाहिए, जिन्होंने बिना जांच-पड़ताल के विश्वविद्यालय को एआई समिट में स्टॉल लगाने की अनुमति दी। निश्चित रूप से भारत ने पिछले कुछ वर्षों में कृत्रिम बुद्धिमत्ता आधारित तकनीक व रोबोटिक उत्पादन के क्षेत्र में ऊंची छलांग लगाई है। युवा शक्ति के देश भारत ने एआई के क्षेत्र में अमेरिका व चीन के बाद अपना तीसरा स्थान बनाया है। जिसकी पुष्टि अंतर्राष्ट्रीय मानक संस्थाओं ने भी की है। लेकिन एक विरोधाभासी हकीकत यह है कि भारत दुनिया का सबसे बड़ी आबादी का देश है, जहां श्रम शक्ति प्रचुर मात्रा में उपलब्ध है।

निस्संदेह, ऐसे वक्त में जब कृषि से लेकर चिकित्सा तक और उत्पादन के क्षेत्र में एआई व रोबोटिक्स की दखल बढ़ रही है, प्रचुर श्रमशक्ति की उपलब्धता के बावजूद भारत को समय के साथ कदमताल करनी होगी। हमें एआई व रोबोटिक्स को अपनाना ही होगा। लेकिन सावधानी के साथ ताकि यह नौकरी खाने वाला बनने के बजाय नौकरी देने वाला बने। इसके साथ ही हमें एआई जगत में अपनी विश्वसनीयता भी कायम करनी होगी। ताकि फिर किसी गलगोटिया यूनिवर्सिटी की खुरापात से देश की फजीहत न हो। बल्कि हमारा शोध व विकास का तंत्र इतना मजबूत हो कि फिर हमारे किसी संस्थान को विदेशी उत्पाद को अपना नवाचारी उत्पाद बताने की जरूरत न पड़े। अन्यथा न केवल एआई समिट बल्कि देश की गरिमा को भी आंच आ सकती है। देश में शोध-अनुसंधान से जुड़े संस्थानों व विश्वविद्यालयों को सोचना होगा कि आज के कृत्रिम मेधा व इंटरनेट के जमाने में किसी खोज के बारे में फर्जी दावा कर पाना संभव नहीं है। बल्कि ऐसे कृत्य से उस संस्थान व देश की प्रतिष्ठा को आंच ही आती है। इसमें दो राय नहीं कि कृत्रिम मेधा आने वाले वर्षों में किसी भी देश की ताकत-संपन्नता का आधार बनेगी। लेकिन इस राह में कामयाबी हासिल करने के लिये देश में शोध-अनुसंधान की बुनियाद मजबूत करने की जरूरत है। अन्यथा देश को छद्म दावों से असहज स्थिति का सामना करना पड़ सकता है। इससे देश की प्रतिष्ठा को आंच भी आ सकती है। निस्संदेह, आज भारत को देश में रोबोटिक्स को लेकर मजबूत इकोसिस्टम तैयार करना होगा। इसके लिये देश के पास तकनीकी क्षमता और प्रतिभा उपलब्ध है, लेकिन जरूरत इंफ्रास्ट्रक्चर से जुड़ी चुनौतियों को दूर करने की है। जिसके लिये सरकारी संबल और इंजीनियरिंग की तमाम शाखाओं में बेहतर तालमेल जरूरी है। निश्चित रूप से साठ के दशक में रोबोटिक्स की शुरुआत करने वाले अमेरिका से मुकाबला करने में हमें कुछ वक्त लगेगा। भले ही भारतीय उद्योग जगत रोबोटिक्स के शुरुआती दौर में हो, लेकिन आज देश के हर आईआईटी संस्थान में रोबोटिक्स लैब हैं। हम अपनी तेज प्रगति पर गर्व कर सकते हैं।

तकनीक के जरिए मातृभाषाओं को बचाने की जरूरत

"मातृभाषाओं के लुप्त होने की कई अन्य वजहें भी हैं। भाषाशास्त्रियों के मुताबिक, व्यक्तिवादी दर्शन, उपभोक्तावाद, सामाजिक-सांस्कृतिक मूल्यों में आ रहे बदलाव, और शहरीकरण के साथ ही पारंपरिक मूल्यों के प्रति घटती निष्ठा और रोजगार के साधनों के रूप में भाषाओं की घटती संख्या भी मातृभाषाओं के खात्मे की वजह बना है।

तकनीकी दौर में मातृभाषाएं सबसे ज्यादा संकट में हैं। इसकी वजह यह है कि मातृभाषाओं को बोलना भी तकनीक से प्रभावित हो रहा है और लेखन तो पूरी तरह उसी पर निर्भर हो गया है। तकनीक की खासियत कहें या कमी, वह बाजार के लिहाज से खुद को विकसित करती है और अपने उत्पादों के लिए इसी नजरिए से शोध करती है। चूंकि मातृभाषाओं में कई ऐसी हैं, जिन्हें बोलने या जिनका इस्तेमाल करने वालों की संख्या बेहद कम है, इसलिए उनसे कमाई की संभावना कम है। चूंकि तकनीकी विकास में काफी धन लगता है, और मातृभाषाओं के एक हिस्से से कमाई की गुंजाइश नहीं दिखती, इसलिए तकनीक उनके सहज इस्तेमाल में दिलचस्पी नहीं दिखाती। इसलिए मातृभाषाओं की बड़ी संख्या लुप्त होने के कगार पर हैं। भारत को ही देखिए। साल 1961 की जनगणना के आंकड़ों के लिहाज से भारत में 1652 भाषाएं थीं। लेकिन सिर्फ दस साल बाद यानी 1971 में यह संख्या घटकर महज 808 रह गई। ऐसा बदलाव तब हुआ, जब तकनीक का बोलबाला नहीं था। लेकिन अब बात उससे भी आगे बढ़ चुकी है। 2013 के भारतीय लोकभाषा सर्वेक्षण के अनुसार, विगत 50 वर्षों में 220 भाषाएँ जहां लुप्त हो गई हैं, वहीं 197 भाषाएँ खत्म होने की कगार पर हैं। मातृभाषाओं के लुप्त होने की कई अन्य वजहें भी हैं। भाषाशास्त्रियों के मुताबिक, व्यक्तिवादी दर्शन, उपभोक्तावाद, सामाजिक-सांस्कृतिक मूल्यों में आ रहे बदलाव, और शहरीकरण के साथ ही पारंपरिक मूल्यों के प्रति घटती निष्ठा और रोजगार के साधनों के रूप में भाषाओं की घटती संख्या भी मातृभाषाओं के खात्मे की वजह बना है। इसके बावजूद कुछ अपवादों को छोड़ दें

तो मातृभाषाओं को लेकर कुछ इलाकों में सम्मोहन बरकरार है। शायद यही वजह है कि इस बार के अंतरराष्ट्रीय मातृभाषा दिवस के लिए यूनेस्को ने जो थीम रखा है, वह बेहद अहम जान पड़ता है। यह थीम है, 'भाषाओं का महत्वः रजत जयंती और सतत विकास'। इस थीम का ध्येय वाक्य 'अनेक भाषाएँ, एक भविष्य' है। पूर्वी बंगाल में 1952 में शहीद हुए भाषा आंदोलनकारियों की याद में अंतरराष्ट्रीय मातृभाषा दिवस मनाने की शुरूआत की पिछले साल यानी 2025 में रजत जयंती थी। तब यूनेस्को ने इस दिवस को भाषाई विविधता, डिजिटल सशक्तिकरण और समावेशी शिक्षा के माध्यम से सतत विकास पर जोर देने पर केंद्रित किया था। अंतरराष्ट्रीय मातृभाषा दिवस पर हर साल यूनेस्को किसी न किसी अहम विषय को ध्येय बनाता है और उस नजरिए से पूरे साल भाषाई विविधता को विकसित करने और उन्हें लागू करने पर जोर देता है। इस बार के ध्येय वाक्य से साफ है कि यूनेस्को चाहता है कि विश्व के सतत विकास में मातृभाषाओं की महत्ता को रेखांकित किया जाए। मातृभाषाएं एक तरह से भाषायी लोकतंत्र को रचती हैं। इस लोकतंत्र को बचाए बिना विविधरंगी संसार को नहीं बचाया जा सकता। सोचिए, अगर उपभोक्तावाद, व्यक्तिवाद और तकनीकी वर्चस्व की वजह से एक रस और एक भाषायी संसार तैयार हो जाए तो दुनिया कितनी नीरस होगी, ज्ञान के तमाम स्रोत तब या तो सूख चुके होंगे या फिर भुला दिए गए होंगे। इसलिए मातृभाषाओं को बचाना और उन्हें सांस्कृतिक लोकतंत्र के प्रतीक के रूप में जिंदा रखना जरूरी हो जाता है। यूनेस्को की ओर से घोषित 'भाषाओं का महत्व – रजत जयंती और सतत विकास' विषय, एक तरह से भाषायी विविधता, बहुभाषावाद और सतत विकास के बीच गहरे संबंधों को ही रेखांकित करता है। चूंकि यूनेस्को ने मातृभाषाओं को संरक्षित करने, भाषायी विविधता को जिंदा रखने और उन पर रश्क करने के साथ ही शिक्षा के स्तर को सुधारने के लिए प्रयासरत है, इसलिए वह लगातार भाषाओं को बचाने का संदेश दे रहा है। दुनिया में इन संदेशों को सुना और समझा भी जा रहा है। चूंकि भाषाएँ सिर्फ संवाद का साधन ही नहीं होतीं, बल्कि सतत विकास लक्ष्यों को हासिल करने का अहम औजार भी हैं, लिहाजा प्राथमिक शिक्षा में उन पर जोर दिया जा रहा है। 2020 में आई भारत की नई शिक्षा नीति में भी मातृभाषाओं में शिक्षा-विशेषकर प्राथमिक शिक्षा पर जोर दिया गया है। दुनियाभर के शिक्षाशास्त्री मानते हैं कि मातृभाषा आधारित शिक्षा समावेशी होती है और बच्चों की समझ को बेहतर बनाने में मददगार होती है। इतना ही नहीं, इसके चलते बच्चे की सीखने की प्रक्रिया भी तेज होती है। मातृभाषा आधारित बहुभाषी शिक्षा के भी नतीजे बेहतर होते हैं। चूंकि सतत विकास में शिक्षा का स्थान अहम है और मातृभाषा आधारित शिक्षा बेहतरीन होती है, यही वजह है कि सतत विकास के लक्ष्यों को अब मातृभाषा के जरिए मिलने वाली शिक्षा में गंभीरता से खोजा जा रहा है। इसीलिए दुनिया एक बार फिर मातृभाषाओं के जरिए शिक्षा की ओर उन्मुख होती दिख रही है।

जैसे-जैसे अधिकाधिक भाषाएँ विलुप्त होती जा रही हैं, भाषायी विविधता खतरे में पड़ती जा रही है। संयुक्त राष्ट्र के अनुसार, विश्व की 40 प्रतिशत आबादी को उस भाषा में शिक्षा प्राप्त करने का अवसर नहीं मिल रहा है, जिन्हें वे बोलते या समझते हैं। मातृभाषाओं का संरक्षण इसलिए भी जरूरी है कि स्थानीय समाज उनके जरिए शिक्षा हासिल कर सकें।

मातृभाषा व्यक्ति के सर्वांगीण विकास, सांस्कृतिक पहचान और बौद्धिक नींव की आधारशिला है। यह सोचने, समझने और संवाद करने का सबसे सहज माध्यम है, जो बच्चे को उसकी विरासत से जोड़ती है। मातृभाषा में शिक्षा से आत्मविश्वास बढ़ता है, संज्ञानात्मक कौशल विकसित होते हैं, और दूसरी भाषाएं सीखना आसान हो जाता है।

मातृभाषा में शिक्षा से बच्चे की अवधारणाओं को समझने की क्षमता तेज होती है और रचनात्मकता बढ़ती है। मातृभाषा संस्कृति, परंपराओं और इतिहास को अगली पीढ़ी तक पहुँचाने का मुख्य माध्यम है। व्यक्ति अपने विचारों, भावनाओं और संवेदनाओं को मातृभाषा में सबसे अच्छी तरह व्यक्त कर सकता है, जिससे मानसिक स्पष्टता आती है। शिक्षा शास्त्रियों के अनुसार, जिन बच्चों की नींव मातृभाषा में मजबूत होती है, मातृभाषाओं से इतर भाषाओं में भी उनका प्रदर्शन बेहतर होता है। मातृभाषाएं परिवार और समुदाय से एक मजबूत भावनात्मक संबंधों की गारंटी भी होती हैं।

दुनिया की हर मातृभाषा अपनी संस्कृति, परंपरा और इतिहास की संवाहक है। इसी वजह से दुनियाभर के मानवशास्त्री मानते हैं कि सांस्कृतिक संरक्षण के लिए भाषायी विविधता का संरक्षण जरूरी है। इतना ही नहीं, मातृभाषाएँ आपसी समझ, सम्मान और सहयोग को भी बढ़ावा देती हैं, इस लिहाज से वे समावेशी समाज के निर्माण में भी सहायक मानी जाती हैं। मानवशास्त्रियों के अनुसार, स्थानीय भाषाएँ ज्ञान का खजाना हैं, जिन्हें आने वाली पीढ़ियों के लिए संरक्षित किया जाना आवश्यक है। इसीलिए यूनेस्को का मानना है कि सतत विकास के लक्ष्यों को हासिल करने के लिए भाषायी विविधता और बहुभाषावाद का उपयोग सहयोगी हो सकता है। इससे विश्व स्तर पर समावेशी विकास को बढ़ावा मिल सकता है। इसलिए जरूरी है कि मातृभाषाओं को तकनीक के लिहाज से विकसित किया जाए। यह कार्य सार्वजनिक संस्थान और सरकारें ही कर सकती हैं।

प्रेरणा

दरियादिल शायरः जब मेहनताना बना इंसानियत की गर्माहट

लाहौर की सर्द सुबहें हमेशा से अपने भीतर एक अजीब-सी खामोशी और गहराई समेटे रहती थीं। धुंध से ढकी सड़कों पर चलते हुए लोग अपने-अपने संघर्षों में खोए रहते थे। इन्हीं सड़कों के बीच एक ऐसा शायर भी रहता था, जिसके पास दौलत भले कम थी, लेकिन दिल बेहद अमीर था। वह शायर थे साहिर लुधियानवी। बाद में उन्होंने मुंबई जाकर हिंदी फिल्मों के लिए अमर गीत लिखे, लेकिन उससे पहले उनका जीवन संघर्ष, संवेदना और इंसानियत की मिसाल से भरा हुआ था।

उस समय साहिर लाहौर में रहते थे और उर्दू की एक मासिक पत्रिका 'साकी' का संपादन और प्रकाशन करते थे। यह काम जितना सम्मानजनक था, उतना ही कठिन भी। सीमित संसाधनों और आर्थिक कठिनाइयों के बावजूद साहिर ने कभी अपने सिद्धांतों से समझौता नहीं किया। उनका मानना था कि जो लोग अपनी रचनाएं पत्रिका में भेजते हैं, वे केवल शब्द नहीं, बल्कि अपने दिल और अनुभव का एक हिस्सा सौंपते हैं। इसलिए वे हमेशा कोशिश करते थे कि प्रकाशित रचनाओं का मेहनताना लेखकों और शायरों तक पहुंचाया जाए।

लेकिन जीवन हमेशा इच्छाओं के अनुसार नहीं चलता। कई बार परिस्थितियां इंसान को ऐसी स्थिति में ला खड़ा करती हैं, जहां वह चाहकर भी अपनी जिम्मेदारी पूरी नहीं कर पाता। ऐसा ही एक समय साहिर के जीवन में भी आया। आर्थिक तंगी इतनी अधिक थी कि वे एक शायर को उसका मेहनताना समय पर नहीं भेज पाए। यह उनके लिए केवल एक आर्थिक समस्या नहीं थी, बल्कि उनके आत्मसम्मान और सिद्धांतों की परीक्षा भी थी।

एक दिन कड़क सर्दी के मौसम में 'शमा' लाहौरी नाम का एक शायर साहिर के घर पहुंचा। उसकी कुछ ग़ज़लें 'साकी' में प्रकाशित हुई थीं और उसे अपने मेहनताने की सख्त जरूरत थी। ठंड इतनी ज्यादा थी कि बिना स्वेटर के उसका शरीर कांप रहा था। उसके चेहरे पर थकान, चिंता और उम्मीद तीनों के भाव साफ दिखाई दे रहे थे। वह उम्मीद लेकर आया था कि शायद आज उसे उसका मेहनताना मिल जाएगा, जिससे उसकी कुछ जरूरतें पूरी हो सकें।

साहिर ने जब दरवाजा खोला और उस शायर की हालत देखी, तो उनका दिल भीतर तक पिघल गया। वे जानते थे कि उनके पास देने के लिए पैसे नहीं हैं, लेकिन वे यह भी जानते थे कि उस व्यक्ति को मदद की जरूरत है। उन्होंने उसे अंदर बुलाया, बैठाया और गर्म चाय पिलाई। चाय की गर्माहट ने उसके शरीर को थोड़ी राहत दी, लेकिन साहिर के मन में एक अलग ही उथल-पुथल चल रही थी।

वे सोच रहे थे कि एक संपादक के रूप में उनकी जिम्मेदारी क्या है और एक इंसान के रूप में उनका कर्तव्य क्या है। कुछ क्षणों के मौन के बाद उन्होंने एक निर्णय लिया—ऐसा निर्णय, जो उनके व्यक्तित्व की महानता को हमेशा के लिए अमर कर देगा।

साहिर उठे और कमरे के कोने में लगे हैंगर के पास गए। वहां उनका एक नया कोट टंगा हुआ था, जिसे उन्होंने हाल ही में खरीदा था। वह कोट उनकी अपनी जरूरत का था, क्योंकि सर्दी लगातार बढ़ रही थी। लेकिन उस क्षण उन्होंने अपनी जरूरत से पहले दूसरे की जरूरत को महत्व दिया। उन्होंने वह कोट उतारा और उस शायर के कंधों पर डालते हुए मुस्कुराकर कहा, "इस महीने हमने शायरों को कैश के बजाय काइंडनेस देने का फैसला किया है।"

यह वाक्य सुनकर वह शायर कुछ क्षणों के लिए स्तब्ध रह गया। उसने कभी कल्पना भी नहीं की थी कि मेहनताने के बदले उसे ऐसा उपहार मिलेगा। उसकी आंखों में कृतज्ञता और आश्चर्य दोनों झलक रहे थे। उस कोट की गर्माहट केवल उसके शरीर को ही नहीं, बल्कि उसके दिल को भी सुकून दे रही थी।

यह घटना केवल एक कोट देने की कहानी नहीं थी। यह उस भावना की कहानी थी, जिसमें इंसान अपनी सीमाओं के बावजूद दूसरों की मदद करता है। साहिर ने उस दिन यह साबित कर दिया कि सच्ची महानता धन में नहीं, बल्कि दिल की उदारता में होती है।

बाद में जब साहिर मुंबई पहुंचे और फिल्म इंडस्ट्री में गीत लिखने लगे, तो उनकी संवेदनशीलता उनके गीतों में साफ दिखाई देने लगी। उनके शब्दों में समाज का दर्द, आम आदमी का संघर्ष और जीवन की सच्चाई झलकती थी। उन्होंने हमेशा रचनाकारों के अधिकारों की रक्षा की और यह सुनिश्चित करने की कोशिश की कि उन्हें उनका उचित सम्मान मिले।

लाहौर की उस सर्द सुबह की घटना उनके जीवन की एक छोटी-सी घटना थी, लेकिन उसका संदेश बहुत बड़ा था। उसने यह दिखाया कि जब इंसान के पास देने के लिए पैसा नहीं होता, तब भी वह अपनी संवेदना और करुणा से किसी की मदद कर सकता है। कई बार एक छोटा-सा मानवीय कार्य किसी के जीवन में बड़ी राहत और उम्मीद बन जाता है।

आज के समय में, जब हर चीज का मूल्य पैसे से आंका जाता है, यह कहानी हमें याद दिलाती है कि कुछ चीजें ऐसी होती हैं, जिनका मूल्य धन से कहीं अधिक होता है। सम्मान, सहानुभूति और इंसानियत ऐसी ही अमूल्य संपत्तियां हैं। साहिर ने अपने जीवन से यह सिखाया कि इंसान की असली पहचान उसके शब्दों से नहीं, बल्कि उसके कर्मों से होती है।

उनका दिया हुआ वह कोट केवल एक वस्त्र नहीं था, बल्कि एक संदेश था—यह संदेश कि इंसानियत सबसे बड़ी संपत्ति है। यह संदेश आज भी उतना ही प्रासंगिक है, जितना उस समय था। जब हम इस घटना के बारे में सोचते हैं, तो हमें एहसास होता है कि सच्ची संवेदना वही है, जो बिना किसी अपेक्षा के दी जाए।

साहिर लुधियानवी की यह दरियादिली हमें प्रेरित करती है कि हम भी अपने जीवन में दूसरों की मदद करने का प्रयास करें। चाहे वह मदद छोटी ही क्यों न हो, उसका प्रभाव बहुत बड़ा हो सकता है। क्योंकि अंत में, लोग यह याद नहीं रखते कि आपने कितना कमाया, बल्कि यह याद रखते हैं कि आपने कितना दिया।

इस तरह लाहौर की उस सर्द सुबह में दिया गया एक कोट केवल एक शायर को ठंड से बचाने का साधन नहीं बना, बल्कि इंसानियत की एक अमर मिसाल बन गया। यह घटना हमें यह सिखाती है कि जब दिल बड़ा हो, तो हर कमी छोटी हो जाती है। और यही सच्ची महानता है—जहां मेहनताना केवल पैसों में नहीं, बल्कि संवेदना और प्रेम में दिया जाता है।

बांग्लादेश की नई सरकार में हिंदू मंत्रियों की आमद

पड़ोसी मुल्क बांग्लादेश में तारिक रहमान के रूप में नई सरकार शपथ ले चुकी है। खास बात ये है रहमान के नेतृत्व वाली नई सरकार में दो हिंदू सांसदों को मंत्री बनाया गया है। उनके इस निर्णय को भारत के साथ प्रत्यक्ष रूप से बिगड़े संबंधों को सुधारने की पहल के रूप में समूची दुनिया देख रही है। इस कदम से चीन-पाकिस्तान चिड़े भी हैं। वो नहीं चाहते कि बांग्लादेश भारत या उनसे वास्ता रखने लोगों को तवज्जो दे। लेकिन, तारिक रहमान ने उनके नापाक मंसूबों को धता बताते हुए, बड़ी सूझबूझता से कदम आगे बढ़ाया। बीते कुछ महीनों में 11 हिंदुओं के साथ हुई निर्मम बर्बरता ने बांग्लादेश की न सिर्फ थू थू करवाई, बल्कि दशको से मधुर संबंधों को भी पटरी से उतार दिया था। इसको लेकर दोनों मुल्कों में तल्खियां बनी हुई थीं। रहमान जानते हैं अगर माहौल ऐसा ही बरकरार रहा, तो रिश्तो की दूरियां घटने वाली नहीं? ऐसी अखरती दुश्वारियों पर गौर करते हुए ही रहमान ने अपनी कैबिनेट में हिंदू समुदाय से ताल्लुक रखने वाले सांसदों को अहम औहदे सौंपे ताकि रिश्तों में फिर से नरमी लाई जा सके। भारत ने भी उनके निर्णय को सराहा है। गौरतलब है कि तारिक रहमान के आगाज से पूर्व बांग्ला-हिंदुओं पर किस तरह के अत्याचार हुए हैं और हो भी रहे हैं? ऐसी निदंनीय घटनाओं को तत्काल प्रभाव से रोकने की चुनौती तारिक रहमान के सामने अभी भी खड़ी है। हालांकि, रोकने के लिए वह अपने कदम तेजी से बढ़ा रहे हैं। प्रधानमंत्री रहमान सबसे पहले पूर्व की अंतरिम सरकार के मुखिया रहे मोहम्मद यूनुस के अटपटे और संबंध बिच्छेद भरे निर्णयों की समीक्षा करेंगे। उनका झुकाव भारत को परेशान करने वाली पाकिस्तान-चीन की संयुक्त खुराफाती नीतियों की ओर ज्यादा रहा था। रहमान अच्छे से समझते हैं कि जबतक मोहम्मद यूनुस कार्यकारी प्रधानमंत्री रहे, उन्होंने भारत के साथ संबंधों को बिगाड़ने की हर संभव कोशिशें कीं। कुछ उन्होंने की और कुछ दूसरे देशों ने करवाई? दूसरे देश कौन से हैं जिनके नाम लेने की शायद जरूरत नहीं? सभी जानते हैं।

प्रधानमंत्री तारिक रहमान भारतीय हुकूमत का साथ लेकर और अपनी कैबिनेट में अल्पसंख्यक हिंदू मंत्रियों की आमद के साथ बांग्लादेश में अगले पांच सालों तक समानांतर सरकार चलाना चाहते हैं। इसी को ध्यान में रखकर जब उनकी पार्टी बीएनपी चुनावों में जीती तो सबसे पहले वह अपने धुरविरोधी विपक्षी नेता और जमात-ए-इस्लामी प्रमुख शफीकुर रहमान के बिना बुलाए, ढ़लती शाम के बाद उनके आवास पहुंच गए। चुनावी गुस्सेबाजियों के इतर उनसे नई सरकार में सहयोग की गुजारिश करी। विपक्षी नेता ने भी राजनीतिक दुश्मनी छोड़कर उनका गर्मजोशी से अपने घर पर स्वागत किया।

दरअसल, इस तरह की खूबसूरत परंपरा का प्रचार-प्रसार पूरे विश्व में होना चाहिए, कि चुनाव बाद विपक्ष से सत्ता पक्ष को कैसे व्यवहार करना चाहिए। ये उन देशों के लिए सीख भी है जहां पक्ष-विपक्ष आपस में अनैतिक कुकर्मों की सभी सीमाएं लांघ रहे हैं। रहमान उस विपक्षी नेता के घर भी पहुंचे जिनकी पार्टी चुनावों में तीसरे स्थान पर रही। नेशनल सिटीजन पार्टी के नाहिद इस्लाम को भी गले लगाया और बांग्लादेश के विकास में उनसे भी सहयोग मांगा। राजनीति में ऐसी तस्वीरों का दिखना दुर्लभ होता है, लेकिन बांग्लादेश में दिखी।

रहमान की जीत पर पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी का उन्हें भाई बताना और उनकी जीत की खुशी में फूल-मिठाईयां को ढाका भेजना भी धूमिल संबंधों में रस भरने जैसा कहा जाएगा। साथ ही रहमान के शपथ में भारत सरकार की ओर से लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला का पहुंचना भी सुखद और नए संबंधों में नए सिरे से गढ़ने जैसा है। नए रंग में रिश्तों को रंगने की दरकार इसलिए भी महसूस होने लगी है क्योंकि बांग्लादेश की सत्यानाशी के लिए जिस तरह से चीन-पाकिस्तान मिलकर घेराबंदी कर रहे हैं जिसका अंदाजा नवगठित सरकार के मुखिया को भी है। बांग्ला-हिंदू संबंध जितने बिगड़ेंगे, उतना फायदा ये दोनों मुल्क मिलकर उठाएंगे। पूर्व की कार्यकारी सरकार को इन्होंने कठपुतली की तरह इस्तेमाल किया। पाकिस्तान के सह पर बांगाली और हिंदुओं को खूब लड़ाया गया। लेकिन संपन्न हुए 13वें राष्ट्रीय चुनाव में तीन हिंदू समुदाय के सांसद जीते हैं जिनमें निताई रॉय चैधरी को स्पीकर, चंटगांव से जीते अधिवक्ता दीपेन दीवान को पहाड़ी क्षेत्रों के संरक्षण के लिए मंत्री, तो वहीं गोयेश्वर रॉय चैधरी को महत्पूर्ण रेलमंत्री बनाया गया है।

बांग्लादेश में नवगठित हुकूमत के साथ करीब एक डेढ़-सालों से दंगों का दंश झेल रहे देश में आखिरकार नई सुबह का आगाज हो चुका है। आवाम को इस दिन का लंबे वक्त से इंतजार था। वहां काफी जद्दोजहद और राजनीतिक अस्थिरता के बीच हुए आम चुनावों में बीएनपी ने बड़े मार्जिन से विजय हासिल की है। कुल संसदीय 298 सीटों में 297 पर चुनाव हुए, उनमें से रिकॉर्ड 209 सीटें बीएनपी ने जीतीं। दूसरे नंबर पर जमात-ए-इस्लामी पार्टी रही जिसने 68 सीटें जीतीं। तारिक रहमान की नई कैबिनेट में डॉ. खलीलुर रहमान को विदेश मंत्री, सलाहुद्दीन अहमद को गृह मंत्री, डॉ. अमीर खसरू महमूद को वित्त एवं प्लानिंग की जिम्मेदारी सौंपी गई है। कुल मिलाकर तारिक रहमान ने शिक्षित और बुद्धिजीवी लोगों से अपनी कैबिनेट को सजाया हैं। कैबिनेट में कुल 50 मंत्री हैं जिनमें 25 कैबिनेट और 24 राज्य मंत्री शामिल हैं।

अभियान

विजय की अधिष्ठात्री मां विजयासनः सलकनपुर की पवित्र पहाड़ी पर विराजती चमत्कारी शक्ति

भारत की आध्यात्मिक परंपरा में शक्ति की उपासना का विशेष स्थान है। जब भी नवरात्रि या गुप्त नवरात्रि का पावन समय आता है, तो पूरे देश में देवी मंदिरों में भक्ति की अद्भुत लहर देखने को मिलती है। इन्हीं पवित्र स्थलों में एक अत्यंत प्रसिद्ध और चमत्कारी शक्ति पीठ है—विजयासन माता मंदिर, जो मध्य प्रदेश के सीहोर जिले के सलकनपुर गांव की ऊंची पहाड़ी पर स्थित है। यह मंदिर केवल एक धार्मिक स्थल नहीं, बल्कि श्रद्धा, विश्वास और विजय का प्रतीक माना जाता है। यहां आने वाले भक्तों का विश्वास है कि मां विजयासन के दर्शन मात्र से जीवन की बाधाएं दूर होती हैं और हर क्षेत्र में विजय का आशीर्वाद प्राप्त होता है। गुप्त नवरात्रि का समय विशेष रूप से मां की साधना के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण माना जाता है। हर वर्ष माघ माह के शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा से नवमी तक गुप्त नवरात्रि मनाई जाती है। इस दौरान दस महाविद्याओं की देवी की पूजा की जाती है, जिनमें काली, तारा, त्रिपुर सुंदरी, भुवनेश्वरी, छिन्नमस्ता, भैरवी, धूमावती, बगलामुखी, मातंगी और कमला देवी शामिल हैं। धार्मिक मान्यता है कि इस समय की गई पूजा और साधना अत्यंत फलदायी होती है। तंत्र साधना करने वाले साधकों के लिए यह समय विशेष महत्व रखता है। कहा जाता है कि जो भक्त इस अवधि में मां विजयासन के दर्शन करते हैं, उन्हें विशेष सिद्धि, सफलता और विजय का आशीर्वाद प्राप्त होता है। सलकनपुर की पहाड़ी पर स्थित यह मंदिर प्राकृतिक सौंदर्य और आध्यात्मिक ऊर्जा का अद्भुत संगम प्रस्तुत करता है। पहाड़ी के शीर्ष पर मां विजयासन की दिव्य प्रतिमा विराजमान है, जो अपने भक्तों पर कृपा की वर्षा करती हैं। मां का स्वरूप अत्यंत तेजस्वी और शक्तिशाली माना जाता है। उनके दर्शन करते ही भक्तों के मन में एक अद्भुत शांति और आत्मविश्वास का संचार होता है। यही कारण है कि इस मंदिर को विजय और शक्ति का केंद्र कहा जाता है।

मां विजयासन के नाम में ही विजय का संदेश छिपा हुआ है। 'विजयासन' का अर्थ है—विजय के आसन पर विराजमान देवी। यह नाम इस बात का प्रतीक है कि मां अपने भक्तों को हर कठिनाई पर विजय प्राप्त करने की शक्ति प्रदान करती हैं। चाहे वह जीवन की व्यक्तिगत समस्याएं हों, शत्रुओं का भय हो, या फिर किसी महत्वपूर्ण कार्य में सफलता की कामना—मां विजयासन की कृपा से सब कुछ संभव माना जाता है। श्रद्धालुओं का विश्वास है कि सच्चे मन से मां की आराधना करने पर हर मनोकामना पूरी होती है। इस मंदिर की सबसे विशेष बात यह है कि यह एक ऊंची पहाड़ी पर स्थित है, जहां तक पहुंचने के लिए श्रद्धालुओं को सैकड़ों सीढ़ियां चढ़नी पड़ती हैं। यह चढ़ाई केवल शारीरिक यात्रा नहीं, बल्कि एक आध्यात्मिक साधना भी मानी जाती है। हर सीढ़ी के साथ भक्तों का विश्वास और भक्ति और भी गहरा होता जाता है। जब वे मंदिर के शिखर पर पहुंचकर मां के दर्शन करते हैं, तो उन्हें ऐसा लगता है मानो उनकी सारी थकान दूर हो गई हो और उन्हें नई ऊर्जा प्राप्त हुई हो।

नवरात्रि के समय इस मंदिर का महत्व और भी बढ़ जाता है। इस दौरान यहां भव्य पूजा, हवन और विशेष अनुष्ठानों का आयोजन किया जाता है। मंदिर परिसर में विशाल मेला लगता है, जिसमें दूर-दूर से श्रद्धालु शामिल होते हैं। भक्त माता के जयकारे लगाते हुए पहाड़ी की सीढ़ियां चढ़ते हैं और मां के दर्शन कर अपने जीवन में सुख, शांति और सफलता की कामना करते हैं। यह दृश्य श्रद्धा और भक्ति का अद्भुत उदाहरण प्रस्तुत करता है।

मां विजयासन मंदिर का इतिहास भी अत्यंत प्राचीन और गौरवशाली माना जाता है। स्थानीय मान्यताओं के अनुसार, यह स्थान सदियों से शक्ति साधना का केंद्र रहा है। यहां कई संतों और साधकों ने तपस्या की और मां की कृपा प्राप्त की। कहा जाता है कि इस स्थान की ऊर्जा इतनी शक्तिशाली है कि यहां की गई प्रार्थना सीधे मां तक पहुंचती है। यही कारण है कि देश ही नहीं, बल्कि विदेशों से भी श्रद्धालु यहां दर्शन के लिए आते हैं।

मंदिर तक पहुंचने का मार्ग भी अत्यंत सुविधाजनक है। इसका निकटतम रेलवे स्टेशन सीहोर है, जो प्रमुख शहरों से जुड़ा हुआ है। यहां से सड़क मार्ग द्वारा आसानी से सलकनपुर पहुंचा जा सकता है। निकटतम हवाई अड्डा भोपाल में स्थित है, जो लगभग 70 किलोमीटर की दूरी पर है। भोपाल से बस, टैक्सी या निजी वाहन द्वारा मंदिर तक पहुंचना आसान है। इंदौर से भी सड़क मार्ग द्वारा यहां पहुंचा जा सकता है। इस प्रकार, देश के किसी भी कोने से श्रद्धालु इस पवित्र स्थल की यात्रा कर सकते हैं।

मंदिर परिसर से आसपास का दृश्य अत्यंत मनमोहक दिखाई देता है। पहाड़ी की ऊंचाई से दूर-दूर तक फैली हरियाली और प्राकृतिक सुंदरता भक्तों के मन को मोह लेती है। यह स्थान केवल धार्मिक दृष्टि से ही नहीं, बल्कि प्राकृतिक सौंदर्य के कारण भी अत्यंत आकर्षक है। यहां आकर भक्तों को ऐसा अनुभव होता है मानो वे प्रकृति और आध्यात्मिकता के अद्भुत संगम में पहुंच गए हों।

मां विजयासन की महिमा से जुड़ी कई चमत्कारी कथाएं भी प्रचलित हैं। श्रद्धालुओं का विश्वास है कि मां अपने भक्तों की हर पुकार सुनती हैं और उन्हें संकटों से बचाती हैं। कई लोगों ने अपने जीवन में कठिन परिस्थितियों से मुक्ति पाने के बाद मां का धन्यवाद करने के लिए यहां आकर पूजा-अर्चना की है। यह मंदिर आशा, विश्वास और विजय का प्रतीक बन चुका है।

गुप्त नवरात्रि, चैत्र नवरात्रि और शारदीय नवरात्रि के दौरान यहां विशेष भीड़ देखने को मिलती है। इस समय मंदिर का वातावरण पूरी तरह भक्तिमय हो जाता है। घंटियों की ध्वनि, मंत्रों का उच्चारण और जयकारों की गूंज से पूरा परिसर ऊर्जा से भर जाता है। यह अनुभव हर श्रद्धालु के लिए अविस्मरणीय होता है।

अंततः, मां विजयासन मंदिर केवल एक धार्मिक स्थल नहीं, बल्कि आस्था और शक्ति का केंद्र है। यहां आने वाले भक्त केवल दर्शन ही नहीं करते, बल्कि अपने भीतर एक नई ऊर्जा और आत्मविश्वास का अनुभव भी करते हैं। मां विजयासन की कृपा से जीवन में आने वाली हर बाधा दूर हो सकती है और हर व्यक्ति अपने लक्ष्य की ओर विजय के साथ आगे बढ़ सकता है। यही कारण है कि सलकनपुर की इस पवित्र पहाड़ी पर स्थित मां विजयासन मंदिर आज भी लाखों श्रद्धालुओं की आस्था का केंद्र बना हुआ है, जहां हर कदम पर भक्ति, विश्वास और विजय का अनुभव होता है।

RNI No. GJHIN/25/A2786 Printed, Published & Owned by RAGINI JIGNESHKUMAR VAGHELA and Printed By (1) JIGNESH RASHIKBHAI GAJJAR at Vansh Corporation, A/8, Shayona Golden Estate, Shahibag, Ahmedabad - 380 004
(2) DESAI RAHUL MAHESHBHAI at Bhavani Offset, "Bhatiya Ni Wadi, Opp Kalupur Railway Station, Kalupur, Ahmedabad-380 002. (3) HADIK MAHESHBHAI DESAI at Bhoomi Offset, "Bhatiya Ni Wadi, Opp Kalupur Railway Station, Kalupur, Ahmedabad-380 002
and Published from B/13, Sneh Plaza Shopping Center, I.O.C. Road, Chandkheda, Ahmedabad - 382 424. Editor : JIGNESHKUMAR PATHABHAI VAGHELA
Regd.Office : B/13, Sneh Plaza Shopping Center, I.O.C. Road, Chandkheda, Ahmedabad - 382 424 Gujarat,India. Phone : (o) 7698333307 (M) 8485951747,7096333307
Email:navsarjansanskruti2016@gmail.com*navsarjansanskruti2016@yahoo.com*Website : www.navsarjansanskruti.com

रंग, रचनात्मकता और संस्कृति का संगम बना 'सूरत आर्ट स्ट्रीट 2026', अठवा लाइंस में उमड़ा कला प्रेमियों का सैलाब

(जीएनएस)। सूरत शहर एक बार फिर कला, संस्कृति और रचनात्मकता के रंगों में सराबोर हो गया, जब अठवा लाइंस स्थित स्केट कॉलेज के एम्फीथिएटर में 'सूरत आर्ट स्ट्रीट 2026' कला महोत्सव का भव्य शुभारंभ हुआ। दक्षिण गुजरात चैंबर ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्री, सार्वजनिक एजुकेशन सोसाइटी और सार्वजनिक यूनिवर्सिटी के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित यह दो दिवसीय कला उत्सव 21 और 22 फरवरी 2026 को शाम 5 बजे से रात 10 बजे तक आयोजित किया जा रहा है। इस महोत्सव ने न केवल स्थानीय कलाकारों को अपनी प्रतिभा प्रदर्शित करने का मंच दिया, बल्कि शहर के नागरिकों को भी कला के विविध रूपों से जुड़ने का अनूठा अवसर प्रदान किया। महोत्सव का उद्घाटन सूरत के महापौर दक्षेश मावाणी ने फीता काटकर किया। इस अवसर पर सूरत शहर भाजपा अध्यक्ष परेश पटेल मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहे। उद्घाटन के बाद दोनों अतिथियों ने प्रदर्शनी का अवलोकन किया और कलाकारों की उत्कृष्ट कृतियों की सराहना की। महापौर दक्षेश मावाणी ने अपने संबोधन में कहा कि ऐसे कला महोत्सव शहर की सांस्कृतिक पहचान को मजबूत करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। उन्होंने कहा कि कला केवल मनोरंजन का माध्यम नहीं है, बल्कि यह समाज के विचारों, भावनाओं और रचनात्मकता की अभिव्यक्ति का सशक्त साधन है। उन्होंने इस पहल को शहर के समग्र विकास और सांस्कृतिक समृद्धि के लिए एक सकारात्मक कदम बताया।

भाजपा शहर अध्यक्ष परेश पटेल ने भी इस आयोजन की सराहना करते हुए कहा कि 'सूरत आर्ट स्ट्रीट 2026' स्थानीय कलाकारों के लिए एक महत्वपूर्ण मंच है, जहां वे अपनी प्रतिभा को प्रदर्शित कर सकते हैं और व्यापक पहचान प्राप्त कर सकते हैं। उन्होंने कहा कि इस तरह के आयोजनों से न केवल कलाकारों को प्रोत्साहन मिलता है, बल्कि आम जनता में भी कला के प्रति जागरूकता और रुचि बढ़ती है। उन्होंने विश्वास व्यक्त किया कि यह महोत्सव आने वाले वर्षों में और भी बड़े स्तर पर आयोजित होगा और सूरत को एक प्रमुख कला केंद्र के रूप में स्थापित करने में मदद करेगा।

चैंबर अध्यक्ष निखिल मद्रासी ने जानकारी देते हुए बताया कि इस महोत्सव में शहर के कई प्रतिभाशाली कलाकारों और क्रिएटर्स ने भाग लिया है। महोत्सव में पेंटिंग प्रदर्शनी, लाइव आर्ट डेमोंस्ट्रेशन, संगीत कार्यक्रम और विभिन्न सांस्कृतिक प्रस्तुतियों का आयोजन किया गया है। कलाकारों ने अपनी कल्पनाशीलता और रचनात्मकता का अद्भुत प्रदर्शन करते हुए विभिन्न विषयों पर आधारित चित्रों और कलाकृतियों को प्रदर्शित किया है। इन कलाकृतियों में आधुनिक कला, पारंपरिक कला, प्रकृति, सामाजिक मुद्दों और सांस्कृतिक विरासत जैसे विषयों को खूबसूरती से प्रस्तुत किया गया है। महोत्सव में आने वाले आगंतुकों को हस्तनिर्मित क्राफ्ट, रचनात्मक उत्पाद और कलात्मक प्रस्तुतियों का अनूठा अनुभव मिल रहा है। विभिन्न स्टॉलों पर कलाकारों ने अपने हाथों से बनाए गए उत्पादों को प्रदर्शित किया है, जिनमें पेंटिंग्स, हस्तशिल्प, सजावटी वस्तुएं और अन्य रचनात्मक उत्पाद शामिल हैं। इन उत्पादों को देखकर यह स्पष्ट होता है कि सूरत के कलाकारों में प्रतिभा और रचनात्मकता की कोई कमी नहीं है।

सार्वजनिक एजुकेशन सोसाइटी के चेयरमैन आशीष वकील ने अपने स्वागत भाषण में कहा कि इस महोत्सव का मुख्य उद्देश्य कला को आम जनता तक पहुंचाना और युवाओं में कला के प्रति रुचि और जागरूकता बढ़ाना है। उन्होंने कहा कि आज के डिजिटल युग में जहां लोग तकनीक की ओर अधिक आकर्षित हो रहे हैं, वहां कला जैसे रचनात्मक क्षेत्रों को प्रोत्साहित करना बेहद जरूरी है। उन्होंने कहा कि कला व्यक्ति के मानसिक और भावनात्मक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है और समाज को संवेदनशील और रचनात्मक बनाती है।

चैंबर की आर्ट, कल्चर एवं हैंडीक्राफ्ट कमेटी की चेयरपर्सन स्वाति सेठवाला ने महोत्सव की विस्तृत जानकारी देते हुए बताया कि इस आयोजन की योजना लंबे समय से बनाई जा रही थी और इसका उद्देश्य सूरत को एक प्रमुख कला केंद्र के रूप में विकसित करना है। उन्होंने कहा कि इस महोत्सव के माध्यम से कलाकारों को अपनी कला प्रदर्शित करने के साथ-साथ नए अवसर प्राप्त होंगे और उन्हें अन्य कलाकारों और कला प्रेमियों के साथ संवाद करने का अवसर मिलेगा।

कमेटी सदस्य मानसी विरानी ने इस आयोजन में उपस्थित सभी अतिथियों और दर्शकों का आभार व्यक्त किया और कहा कि इस तरह के आयोजनों की सफलता कलाकारों और कला प्रेमियों के सहयोग पर निर्भर करती है। उन्होंने विश्वास व्यक्त किया कि भविष्य में भी ऐसे आयोजन आयोजित किए जाते रहेंगे और सूरत की सांस्कृतिक पहचान को और मजबूत किया जाएगा।

इस अवसर पर चैंबर की लेडीज विंग की चेयरपर्सन श्रीमती कृतिका शाह, श्रीमती मयूरी मेवावाला और वाइस चेयरपर्सन श्रीमती अल्पा मद्रासी सहित कई गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहे। इसके अलावा चैंबर के पूर्व अध्यक्ष विजय मेवावाला, ऑनरेरी मिनिस्टर बिजल जरीवाला, ऑनरेरी ट्रेजरर सीए मितेश मोदी, पूर्व अध्यक्ष रोहित मेहता और रूपिन पचीगर सहित कई प्रमुख अतिथियों ने भी महोत्सव में भाग लिया और कलाकारों का उत्साहवर्धन किया।

'सूरत आर्ट स्ट्रीट 2026' केवल एक कला प्रदर्शनी नहीं, बल्कि यह रचनात्मकता, संस्कृति और सामुदायिक जुड़ाव का उत्सव है। इस महोत्सव ने कलाकारों, कला प्रेमियों और आम नागरिकों को एक साथ लाकर कला के माध्यम से संवाद और अभिव्यक्ति का मंच प्रदान किया है। यह आयोजन न केवल कलाकारों को पहचान दिलाने में मदद कर रहा है, बल्कि शहर के सांस्कृतिक जीवन को भी समृद्ध बना रहा है।

दो दिनों तक चलने वाला यह कला महोत्सव सूरत के कला प्रेमियों और युवाओं के लिए आकर्षण का प्रमुख केंद्र बना हुआ है। बड़ी संख्या में लोग इस महोत्सव में भाग लेकर कला के विविध रूपों का आनंद ले रहे हैं और कलाकारों की रचनात्मकता की सराहना कर रहे हैं। यह आयोजन इस बात का प्रमाण है कि सूरत केवल औद्योगिक और आर्थिक दृष्टि से ही नहीं, बल्कि सांस्कृतिक और कलात्मक दृष्टि से भी एक समृद्ध और प्रगतिशील शहर है।

इस प्रकार 'सूरत आर्ट स्ट्रीट 2026' ने सूरत की सांस्कृतिक पहचान को नई ऊंचाई दी है और यह साबित किया है कि कला समाज को जोड़ने और प्रेरित करने की अद्भुत शक्ति रखती है। यह महोत्सव आने वाले समय में सूरत को देश के प्रमुख कला केंद्रों में शामिल करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम साबित हो सकता है।

विश्व चिंतन दिवस पर सेवा, अनुशासन और नेतृत्व का संदेश: केंद्रीय विद्यालय क्रमांक 3 ओएनजीसी, सूरत में प्रेरणादायक आयोजन

(जीएनएस)। केंद्रीय विद्यालय क्रमांक 3 ओएनजीसी, सूरत में 21 फरवरी 2026 को विश्व चिंतन दिवस (World Thinking Day) का आयोजन अत्यंत उत्साह, गरिमा और प्रेरणादायक वातावरण के साथ किया गया। यह आयोजन सत्र 2025–26 के अंतर्गत स्काउट–गाइड गतिविधियों का एक महत्वपूर्ण हिस्सा था, जिसका उद्देश्य विद्यार्थियों में सेवा भावना, नेतृत्व क्षमता, अनुशासन और सामाजिक जिम्मेदारी जैसे मूल्यों का विकास करना था। कार्यक्रम में विद्यार्थियों, शिक्षकों और विद्यालय प्रशासन की सक्रिय भागीदारी ने इसे यादगार और सफल बना दिया।

इस विशेष अवसर पर कार्यक्रम का शुभारंभ स्काउट–गाइड आंदोलन के संस्थापक लॉर्ड रॉबर्ट बैडेन-पॉवेल के चित्र पर पुष्पमाला अर्पित कर उन्हें श्रद्धांजलि देने के साथ हुआ। इस अवसर पर विद्यार्थियों को उनके जीवन, विचारों और स्काउट–गाइड आंदोलन में उनके योगदान के बारे में जानकारी दी गई। विद्यार्थियों को बताया गया कि लॉर्ड बैडेन-पॉवेल ने युवाओं के व्यक्तित्व विकास और राष्ट्र सेवा की भावना को जागृत करने के लिए इस आंदोलन की शुरुआत की थी, जो आज विश्वभर में करोड़ों युवाओं के जीवन को दिशा दे रहा है।

कार्यक्रम के दौरान एक छात्र द्वारा प्रस्तुत प्रेरणादायक भाषण ने सभी उपस्थित लोगों को गहराई से प्रभावित किया। इस भाषण में स्काउट–गाइड के मूल सिद्धांतों, सेवा की भावना, आत्मनिर्भरता और समाज के प्रति कर्तव्य के महत्व पर प्रकाश डाला गया। छात्र ने यह भी बताया कि स्काउट–गाइड केवल एक गतिविधि नहीं, बल्कि जीवन जीने का एक आदर्श तरीका है, जो व्यक्ति को जिम्मेदार, अनुशासित और संवेदनशील नागरिक बनने के लिए प्रेरित करता है।

इस अवसर पर विद्यार्थियों द्वारा प्रस्तुत विभिन्न गतिविधियां कार्यक्रम का मुख्य आकर्षण रहीं। स्काउट और गाइड विद्यार्थियों ने पिरामिड गतिविधि का शानदार प्रदर्शन किया, जिसमें टीम वर्क, संतुलन और समन्वय की उत्कृष्ट झलक देखने को मिली। इस गतिविधि ने यह संदेश दिया कि सहयोग और सामूहिक प्रयास से किसी भी लक्ष्य को प्राप्त किया जा सकता है।

इसके अलावा, गांठ बांधने (Knotting) का प्रदर्शन भी विद्यार्थियों द्वारा प्रस्तुत किया गया, जिसमें स्काउट–गाइड के व्यावहारिक कौशल को दर्शाया गया। यह कौशल आपातकालीन परिस्थितियों में अत्यंत उपयोगी होता है और विद्यार्थियों को आत्मनिर्भर बनने में मदद करता है। कक्षा 7 के स्काउट और गाइड विद्यार्थियों द्वारा प्रस्तुत बी.पी.-6 का मंचन भी अत्यंत प्रभावशाली रहा। इस प्रस्तुति के माध्यम से स्काउट–गाइड के छह महत्वपूर्ण सिद्धांतों को नाटकीय रूप में प्रस्तुत किया गया, जिसे दर्शकों ने खूब सराहा।

कार्यक्रम का मंच संचालन गाइड कैप्टन रंजन डामोर और फ्लॉक लीडर सुश्री कोमल द्वारा अत्यंत प्रभावी और व्यवस्थित रूप से किया गया। उनके कुशल संचालन ने पूरे कार्यक्रम को एक सुंदर और अनुशासित स्वरूप प्रदान किया।

इस अवसर पर स्काउट–गाइड गतिविधियों में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले विद्यार्थियों को सम्मानित भी किया गया। प्रथम और द्वितीय सोपान पूर्ण करने वाले गाइड विद्यार्थियों को प्रमाण पत्र प्रदान किए गए। यह सम्मान विद्यार्थियों के लिए प्रेरणा का स्रोत बना और उन्हें आगे भी उत्कृष्ट प्रदर्शन करने के लिए प्रोत्साहित किया।

कार्यक्रम में कब और बुलबुल समूह के नन्हे विद्यार्थियों ने स्काउट/गाइड क्लैप्स प्रस्तुत कर सभी का मन मोह लिया। उनकी ऊर्जा और उत्साह ने कार्यक्रम में विशेष आकर्षण जोड़ा। कक्षा 8 के स्काउट्स द्वारा प्रस्तुत "मेक अ मेलोडी" एक्शन सॉन्ग ने भी सभी को मंत्रमुग्ध कर दिया। इस प्रस्तुति में संगीत, ताल और भावों का सुंदर समन्वय देखने को मिला। इसके अतिरिक्त, जोशीला येल और हेमांग व उनकी टीम द्वारा प्रस्तुत रिप-टिप एक्शन ने कार्यक्रम में उत्साह और ऊर्जा का संचार किया। इस प्रस्तुति ने विद्यार्थियों के आत्मविश्वास, अनुशासन और टीम भावना को दर्शाया।

कार्यक्रम के अंत में विद्यालय के प्राचार्य राजेश कुमार ने विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए स्काउट–गाइड आंदोलन के महत्व पर प्रकाश डाला। उन्होंने विद्यार्थियों को अनुशासन, सेवा और जिम्मेदारी के मूल्यों को अपने जीवन में अपनाने की प्रेरणा दी। उन्होंने कहा कि स्काउट–गाइड गतिविधियां विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं और उन्हें एक अच्छा नागरिक बनने के लिए तैयार करती हैं।

प्राचार्य ने यह भी कहा कि आज के प्रतिस्पर्धात्मक युग में केवल शैक्षणिक ज्ञान ही पर्याप्त नहीं है, बल्कि नैतिक मूल्यों, नेतृत्व क्षमता और सामाजिक जिम्मेदारी का विकास भी आवश्यक है। स्काउट–गाइड आंदोलन इन सभी गुणों को विकसित करने का एक उत्कृष्ट माध्यम है।

कार्यक्रम के अंत में कब मास्टर पार्थ शुक्ला द्वारा धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया गया। उन्होंने कार्यक्रम के सफल आयोजन के लिए सभी विद्यार्थियों, शिक्षकों और आयोजकों का आभार व्यक्त किया। इसके पश्चात सर्वधर्म प्रार्थना के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ, जिसने एकता, शांति और सद्भाव का संदेश दिया।

यह आयोजन विद्यार्थियों के लिए केवल एक सांस्कृतिक कार्यक्रम नहीं था, बल्कि एक प्रेरणादायक अनुभव भी था, जिसने उन्हें सेवा, सहयोग, अनुशासन और नेतृत्व जैसे महत्वपूर्ण जीवन मूल्यों को समझने और अपनाने के लिए प्रेरित किया। इस प्रकार के कार्यक्रम विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं और उन्हें समाज के प्रति जिम्मेदार और जागरूक नागरिक बनने के लिए तैयार करते हैं।

विश्व चिंतन दिवस का यह आयोजन केंद्रीय विद्यालय क्रमांक 3 ओएनजीसी, सूरत के लिए एक महत्वपूर्ण और यादगार अवसर साबित हुआ। इसने न केवल विद्यार्थियों के उत्साह और प्रतिभा को प्रदर्शित किया, बल्कि स्काउट–गाइड आंदोलन के मूल्यों और उद्देश्यों को भी प्रभावी रूप से प्रस्तुत किया। इस आयोजन के माध्यम से विद्यार्थियों में सेवा भावना, नेतृत्व क्षमता और सामाजिक जिम्मेदारी की भावना को और अधिक मजबूत करने में सफलता प्राप्त हुई।

भारतीय शेयर बाजार में खुदरा निवेशकों का बढ़ता विश्वास: अस्थिरता के बीच 16,944 करोड़ रुपये की रिकॉर्ड खरीदारी

(जीएनएस)। नेशनल स्टॉक एक्सचेंज ऑफ इंडिया की ताजा रिपोर्ट के अनुसार वैश्विक आर्थिक अनिश्चितताओं, भू-राजनीतिक तनाव और अंतरराष्ट्रीय बाजारों में उतार-चढ़ाव के बावजूद भारतीय पूंजी बाजार में व्यक्तिगत खुदरा निवेशकों की सक्रियता लगातार बढ़ रही है। जनवरी 2026 में खुदरा निवेशकों ने सेकेंडरी मार्केट में 16,944 करोड़ रुपये की शुद्ध खरीदारी दर्ज की, जो अक्टूबर 2024 के बाद पिछले 15 महीनों का सबसे बड़ा मासिक निवेश है। यह आंकड़ा इस बात का स्पष्ट संकेत है कि घरेलू निवेशकों का भारतीय इक्विटी बाजार पर भरोसा मजबूत बना हुआ है और वे दीर्घकालिक निवेश के अवसरों को पहचानते हुए सक्रिय भागीदारी कर रहे हैं। विशेषज्ञों का मानना है कि भारतीय शेयर बाजार में खुदरा निवेशकों की बढ़ती भागीदारी देश की आर्थिक स्थिरता और वित्तीय जागरूकता का सकारात्मक संकेत है। पहले जहां बाजार की दिशा मुख्य रूप से विदेशी संस्थागत निवेशकों (FII) पर निर्भर रहती थी, वहीं अब घरेलू निवेशकों की मजबूत उपस्थिति बाजार को स्थिरता और संतुलन प्रदान कर रही है। जनवरी 2026 में की गई 16,944 करोड़ रुपये की शुद्ध खरीदारी ने यह साबित कर दिया है कि बाजार में गिरावट या अस्थिरता के बावजूद खुदरा निवेशक इसे अवसर के रूप में देख रहे हैं, न कि जोखिम के रूप में।

एनएसई की रिपोर्ट के अनुसार मासिक आधार पर खुदरा निवेशकों की खरीद में उल्लेखनीय वृद्धि दर्ज की गई है, जिससे वित्त वर्ष 2025-26 के दौरान सेकेंडरी मार्केट से होने वाली कुल शुद्ध निकासी में भी उल्लेखनीय कमी आई है। चालू वित्त वर्ष में अब तक शुद्ध निकासी घटकर केवल 687 करोड़ रुपये रह गई है, जो बाजार के लिए एक बेहद सकारात्मक संकेत माना जा रहा है। यह आंकड़ा दर्शाता है कि निवेशकों ने बाजार में गिरावट के समय घबराकर बिकवाली करने के बजाय निवेश बनाए रखा और कई मामलों में नए निवेश भी किए। यदि प्राइमरी मार्केट के आंकड़ों को भी शामिल किया जाए, तो वित्त वर्ष 2025-26 में अब तक खुदरा निवेशकों का कुल शुद्ध निवेश 40,685 करोड़ रुपये तक पहुंच चुका है। इसमें प्रारंभिक सार्वजनिक निर्गम (IPO) में खुदरा निवेशकों की बढ़ती भागीदारी की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। पिछले कुछ वर्षों में भारत में IPO बाजार तेजी से विकसित हुआ है और खुदरा निवेशकों ने नई कंपनियों में निवेश करने में विशेष रुचि दिखाई है। डिजिटल प्लेटफॉर्म, ऑनलाइन ट्रेडिंग ऐप्स और निवेश से संबंधित जानकारी की आसान उपलब्धता ने भी निवेशकों की भागीदारी को बढ़ावा दिया है।

हालांकि, यह भी ध्यान देने योग्य है कि खुदरा निवेश का कुल स्तर पिछले वित्त वर्ष 2024-25 के 1.59 लाख करोड़ रुपये के स्तर से कम है। इसका कारण यह है कि निवेशकों ने वर्तमान वैश्विक परिस्थितियों को देखते हुए अधिक सतर्क रणनीति अपनाई है। उन्होंने जोखिम को समझते हुए संतुलित और सोच-समझकर निवेश करने का विकल्प चुना है। यह परिपक्व निवेश व्यवहार का संकेत है, जो भारतीय निवेशकों की वित्तीय समझ में सुधार को दर्शाता है।

घरेलू शेयर बाजार में हाल ही में आई गिरावट के बाद बाजार ने तेजी से रिकवरी भी दर्ज की है। बैंकिंग और धातु क्षेत्र के शेयरों में मजबूत खरीदारी, संभावित व्यापार समझौतों की सकारात्मक खबरें और वैश्विक बाजारों में स्थिरता के संकेतों ने निवेशकों के विश्वास को मजबूत किया है। बीएसई सेंसेक्स 316.57 अंक की बढ़त के साथ 82,814.71 पर बंद हुआ, जबकि कारोबार के दौरान यह 633.94 अंक तक चढ़ गया। इसी तरह निफ्टी 50 116.90 अंक की तेजी के साथ 25,571.25 के स्तर पर पहुंच गया। यह तेजी दर्शाती है कि बाजार में निवेशकों का विश्वास बना हुआ है और वे दीर्घकालिक विकास की संभावनाओं को लेकर आशावादी हैं।

बाजार पूंजीकरण के संदर्भ में भी महत्वपूर्ण वृद्धि दर्ज की गई। सूचीबद्ध कंपनियों का कुल बाजार पूंजीकरण 1.89 लाख करोड़ रुपये बढ़ गया, जो निवेशकों के लिए सकारात्मक संकेत है। सेंसेक्स की 30 में से 22 कंपनियों के शेयरों में तेजी दर्ज की गई, जिससे व्यापक बाजार मजबूती के संकेत मिले। इस दौरान NTPC Limited का शेयर सर्वाधिक 2.73 प्रतिशत की तेजी के साथ बंद हुआ, जो ऊर्जा क्षेत्र में निवेशकों की मजबूत रुचि को दर्शाता है।

दूसरी ओर, विदेशी संस्थागत निवेशकों (FII) ने इस अवधि के दौरान 934.61 करोड़ रुपये मूल्य के शेयरों की शुद्ध बिकवाली की। आमतौर पर FII की बिकवाली बाजार पर दबाव डालती है, लेकिन इस बार घरेलू खुदरा निवेशकों की मजबूत खरीदारी ने इस दबाव को संतुलित कर दिया। यह एक महत्वपूर्ण बदलाव है, क्योंकि इससे स्पष्ट होता है कि भारतीय बाजार अब केवल विदेशी निवेश पर निर्भर नहीं है, बल्कि घरेलू निवेशकों की भूमिका भी निर्णायक होती जा रही है।

राजकोट में विकास कार्यों की समीक्षा: जिला को-ऑर्डिनेशन कमेटी की बैठक में लंबित मुद्दों के त्वरित समाधान पर जोर

(जीएनएस)। राजकोट में शनिवार को जिला ग्रीवांस को-ऑर्डिनेशन कमेटी की महत्वपूर्ण बैठक आयोजित की गई, जिसकी अध्यक्षता जिला कलेक्टर डॉ. ओम प्रकाश ने की। बैठक का मुख्य उद्देश्य जिले में लंबित जनहित से जुड़े मुद्दों की समीक्षा करना और उनके त्वरित एवं समयबद्ध समाधान के लिए संबंधित विभागों को स्पष्ट दिशा-निर्देश देना था। इसके साथ ही विभिन्न विकास परियोजनाओं की प्रगति का भी विस्तृत आकलन किया गया।

बैठक के दौरान जनप्रतिनिधियों और अधिकारियों ने मिलकर नागरिक सुविधाओं, बुनियादी ढांचे और प्रशासनिक कार्यों से जुड़े कई अहम विषयों पर चर्चा की। जिला प्रशासन ने स्पष्ट किया कि जनता से जुड़े किसी भी मुद्दे को अनदेखा नहीं किया जाएगा और सभी विभाग आपसी समन्वय के साथ कार्य करते हुए समस्याओं का शीघ्र समाधान सुनिश्चित करेंगे।

बैठक में सांसद रामभाई मोकरिया ने हरिपर खारी रोड पर पुल निर्माण का मुद्दा प्रमुखता से उठाया। उन्होंने कहा कि इस मार्ग पर यातायात का दबाव लगातार बढ़ रहा है, जिससे लोगों को आवागमन में कठिनाई का सामना करना पड़ रहा है। इस पर अधिकारियों ने जानकारी दी कि पुल निर्माण के लिए नया प्रस्ताव तैयार कर लिया गया है और आवश्यक तकनीकी एवं प्रशासनिक प्रक्रियाएं पूरी की जा रही हैं। कलेक्टर ने संबंधित विभाग को निर्देश दिया कि परियोजना को प्राथमिकता के आधार पर आगे बढ़ाया जाए ताकि स्थानीय नागरिकों को शीघ्र राहत मिल सके।

विधायक रमेशभाई टिलाला ने शापर वेरावल में बन रहे प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र (PHC) की प्रगति के बारे में जानकारी मांगी। अधिकारियों ने बताया कि मुख्य भवन का निर्माण कार्य पूर्ण हो चुका है और आवश्यक उपकरणों एवं स्टाफ की नियुक्ति की प्रक्रिया अंतिम चरण में है। कलेक्टर ने स्वास्थ्य विभाग को निर्देश दिया कि सभी औपचारिकताएं जल्द पूरी कर केंद्र को शीघ्र शुरू किया जाए, ताकि क्षेत्र के लोगों को बेहतर स्वास्थ्य सुविधाएं उपलब्ध हो सकें।

इसी क्रम में शापर वेरावल के बुधवार बाजार में स्वच्छता व्यवस्था को लेकर भी चर्चा हुई। बाजार क्षेत्र में गंदगी और अव्यवस्था की शिकायतों को गंभीरता से लेते हुए प्रशासन ने नगर निकाय को नियमित सफाई सुनिश्चित करने और आवश्यकता पड़ने पर दंडात्मक कार्रवाई करने के निर्देश दिए। अधिकारियों ने कहा कि सार्वजनिक स्थानों की स्वच्छता बनाए रखना सामूहिक जिम्मेदारी है और इसमें व्यापारियों तथा नागरिकों का सहयोग भी आवश्यक है।

बैठक में शास्त्री मैदान से संबंधित मुद्दों पर भी विस्तार से विचार-विमर्श किया गया। अधिकारियों ने जानकारी दी कि मैदान के नीचे मौजूद दबाव को हटाने का कार्य सफलतापूर्वक पूरा कर लिया गया है। मैदान की सुरक्षा और स्वच्छता सुनिश्चित करने के लिए तीनों प्रवेश द्वारों पर सुरक्षा कर्मियों की तैनाती की जाएगी। साथ ही, गेट को नुकसान पहुंचाने या मैदान में कचरा फेंकने वाले वाहनों को जब्त कर सख्त कार्रवाई करने के निर्देश भी दिए गए। प्रशासन का उद्देश्य है कि यह सार्वजनिक स्थल सुरक्षित और सुव्यवस्थित बना रहे।

विधायक दर्शिताबेन शाह ने वार्ड 11 में प्लॉट के स्वामित्व से जुड़ा मामला उठाया और अनाज एटीएम के लिए उपयुक्त स्थान उपलब्ध कराने की मांग की। इस पर संबंधित अधिकारियों को आवश्यक दस्तावेजों की जांच कर शीघ्र निर्णय लेने के निर्देश दिए गए। कलेक्टर ने कहा कि जनकल्याणकारी योजनाओं के प्रभावी क्रियान्वयन के लिए बुनियादी व्यवस्थाएं समय पर सुनिश्चित की जानी चाहिए।

बैठक में जिला पंचायत अध्यक्ष प्रवीणाबेन रंगानी, जिला विकास अधिकारी आनंदू सुरेश गोविंद, राजकोट ग्रामीण पुलिस प्रमुख विजयसिंह गुर्जर, सहायक कलेक्टर महक जैन, डिप्टी पुलिस कमिश्नर राकेश देसाई तथा रेजिडेंट अतिरिक्त कलेक्टर एन.के. मुछार सहित विभिन्न विभागों के वरिष्ठ अधिकारी उपस्थित रहे। सभी अधिकारियों ने अपने-अपने विभागों की प्रगति रिपोर्ट प्रस्तुत की और आगामी कार्ययोजना की रूपरेखा साझा की।

कलेक्टर डॉ. ओम प्रकाश ने स्पष्ट शब्दों में कहा कि प्रशासन की प्राथमिकता जनता की समस्याओं का त्वरित समाधान है। उन्होंने निर्देश दिया कि लंबित मामलों को प्राथमिकता सूची में शामिल कर निर्धारित समयसीमा में निपटाया जाए। उन्होंने यह भी कहा कि विभागों के बीच समन्वय और जवाबदेही सुनिश्चित की जाए, ताकि विकास कार्यों में किसी प्रकार की देरी न हो।

बैठक के अंत में प्रशासन ने दोहराया कि जिला को-ऑर्डिनेशन कमेटी की बैठकें केवल औपचारिकता नहीं, बल्कि जनहित के मुद्दों के समाधान का प्रभावी मंच हैं। नियमित समीक्षा और स्पष्ट दिशा-निर्देशों के माध्यम से राजकोट जिले में विकास कार्यों को गति देने और नागरिक सुविधाओं को सुदृढ़ करने का प्रयास जारी रहेगा।

अमेरिकी सुप्रीम कोर्ट के ऐतिहासिक फैसले से सूरत टेक्सटाइल उद्योग में नई उम्मीद, निर्यात और निवेश को मिलेगा बड़ा प्रोत्साहन

(जीएनएस)। सूरत, जिसे भारत की टेक्सटाइल राजधानी के रूप में जाना जाता है, एक बार फिर वैश्विक व्यापार के केंद्र में आ गया है। हाल ही में Supreme Court of the United States द्वारा अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के वैश्विक टैरिफ को अवैध घोषित किए जाने के फैसले ने अंतरराष्ट्रीय व्यापार जगत में नई हलचल पैदा कर दी है। इस निर्णय को भारतीय टेक्सटाइल उद्योग, विशेष रूप से सूरत के मैन-मेड फाइबर (MMF) और फैब्रिक सेक्टर के लिए एक महत्वपूर्ण अवसर के रूप में देखा जा रहा है। उद्योग जगत का मानना है कि इस फैसले से न केवल निर्यात में वृद्धि होगी, बल्कि निवेश, रोजगार और उत्पादन के क्षेत्र में भी बड़ा बदलाव देखने को मिलेगा।

सूरत का टेक्सटाइल उद्योग लंबे समय से देश की अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण योगदान देता रहा है। यहां हजारों छोटे-बड़े कारखाने, पावरलूम इकाइयां, प्रोसेसिंग हाउस और ट्रेडिंग कंपनियां कार्यरत हैं। यह उद्योग न केवल गुजरात बल्कि पूरे भारत के लाखों लोगों को रोजगार प्रदान करता है। ऐसे में अमेरिका जैसे बड़े बाजार में टैरिफ कम या समाप्त होने की संभावना सूरत के लिए एक बड़ी आर्थिक राहत के रूप में सामने आई है।

सूरत के प्रमुख कपड़ा कारोबारी गिरधर गोपाल मूंदड़ा ने इस फैसले का स्वागत करते हुए कहा कि यह निर्णय वैश्विक टेक्सटाइल व्यापार की दिशा बदल सकता है। उन्होंने बताया कि अमेरिका द्वारा भारतीय टेक्सटाइल उत्पादों पर लगभग 18 प्रतिशत का टैरिफ लगाया गया था,

जिससे भारतीय उत्पाद अमेरिकी बाजार में महंगे हो जाते थे और प्रतिस्पर्धा में पीछे रह जाते थे। अब यदि यह टैरिफ समाप्त होता है, तो भारतीय मैन-मेड फाइबर यार्न और फैब्रिक्स अधिक प्रतिस्पर्धी कीमत पर उपलब्ध होंगे, जिससे उनकी मांग में उल्लेखनीय वृद्धि हो सकती है।

विशेषज्ञों का मानना है कि अमेरिकी बाजार दुनिया के सबसे बड़े टेक्सटाइल उपभोक्ता बाजारों में से एक है। यहां की मांग स्थिर और विशाल है। सूरत का टेक्सटाइल उद्योग पहले से ही गुणवत्ता और उत्पादन क्षमता के मामले में मजबूत स्थिति में है। ऐसे में टैरिफ हटने के बाद सूरत के उत्पाद अमेरिका में अधिक तेजी से अपनी जगह बना सकते हैं। इससे निर्यातकों को नए ऑर्डर मिलने की संभावना बढ़ेगी और व्यापार में नई गति आएगी।

इस फैसले का प्रभाव केवल निर्यात तक सीमित नहीं रहेगा, बल्कि इसका सकारात्मक असर पूरे औद्योगिक तंत्र पर पड़ेगा। निर्यात बढ़ने से उद्योगपतियों को नई मशीनों और आधुनिक तकनीक में निवेश करने का अवसर मिलेगा। इससे उत्पादन क्षमता बढ़ेगी और उद्योग अधिक प्रतिस्पर्धी बनेगा। साथ ही, नई इकाइयों की स्थापना और विस्तार से रोजगार के नए अवसर भी पैदा होंगे, जिससे स्थानीय अर्थव्यवस्था को मजबूती मिलेगी।

सूरत लंबे समय से सिंथेटिक और मैन-मेड फैब्रिक्स के उत्पादन में अग्रणी रहा है। यहां उत्पादित फैब्रिक्स न केवल भारत के विभिन्न राज्यों में बल्कि दुनिया के कई देशों में निर्यात किए जाते हैं। यदि अमेरिकी बाजार में भारतीय उत्पादों के लिए व्यापारिक बाधाएं कम होती हैं, तो सूरत के निर्यातकों के लिए यह एक बड़ा अवसर होगा। इससे सूरत को वैश्विक टेक्सटाइल हब के रूप में स्थापित करने के प्रयासों को और बल मिलेगा। टेक्सटाइल विशेषज्ञों का कहना है कि बदलते वैश्विक व्यापार परिदृश्य में केवल अवसर मिलना ही पर्याप्त नहीं है, बल्कि उन अवसरों का सही उपयोग करना भी जरूरी है। इसके लिए उद्योग को गुणवत्ता सुधार, आधुनिक तकनीक के उपयोग और अंतरराष्ट्रीय मानकों के पालन पर विशेष ध्यान देना होगा। वैश्विक बाजार में प्रतिस्पर्धा लगातार बढ़ रही है, इसलिए उत्पादों की गुणवत्ता, डिजाइन और समय पर आपूर्ति सुनिश्चित करना आवश्यक होगा। इसके अलावा, उद्योग को पर्यावरणीय मानकों और सतत उत्पादन प्रक्रियाओं को भी अपनाना होगा। आज के वैश्विक बाजार में पर्यावरण-अनुकूल उत्पादन को विशेष महत्व दिया जाता है। यदि सूरत का उद्योग इन मानकों को अपनाता है, तो वह अंतरराष्ट्रीय बाजार में अपनी स्थिति और मजबूत कर सकता है।

व्यापार जगत का मानना है कि यह फैसला सूरत के टेक्सटाइल उद्योग के लिए एक टर्निंग पॉइंट साबित हो सकता है। लंबे समय से वैश्विक प्रतिस्पर्धा और व्यापारिक बाधाओं के कारण उद्योग को कई चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा था। लेकिन अब नई संभावनाओं के द्वार खुलने से उद्योग में सकारात्मक माहौल बना है।

इस फैसले से छोटे और मध्यम स्तर के उद्योगों को भी लाभ मिलेगा। सूरत में बड़ी संख्या में छोटे उद्योग कार्यरत हैं, जो बड़े निर्यातकों के लिए उत्पादन करते हैं। निर्यात बढ़ने से इन इकाइयों को भी अधिक काम मिलेगा, जिससे उनकी आय और स्थिरता में सुधार होगा।

सूरत के उद्योगपतियों और व्यापारियों ने इस फैसले को भारत के लिए एक बड़ी उपलब्धि बताया है। उनका मानना है कि यदि सरकार और उद्योग मिलकर इस अवसर का सही उपयोग करते हैं, तो भारत वैश्विक टेक्सटाइल बाजार में अपनी हिस्सेदारी को और बढ़ा सकता है।

आने वाले समय में यह देखना महत्वपूर्ण होगा कि उद्योग इस अवसर का किस प्रकार लाभ उठाता है। यदि उत्पादन क्षमता बढ़ाई जाती है, गुणवत्ता में सुधार किया जाता है और अंतरराष्ट्रीय बाजार की मांग के अनुसार रणनीति बनाई जाती है, तो सूरत का टेक्सटाइल उद्योग वैश्विक स्तर पर नई ऊंचाइयों को छू सकता है।

कुल मिलाकर, अमेरिकी सुप्रीम कोर्ट का यह फैसला सूरत के टेक्सटाइल उद्योग के लिए नई उम्मीद और संभावनाओं का संदेश लेकर आया है।

राजकोट का शहरी विकास 'ईज ऑफ लिविंग' के विजन को चरितार्थ कर रहा है

आगामी समय में राजकोट के लोगों को मिलेगी अत्याधुनिक स्पोर्ट्स कॉम्प्लेक्स, कन्वेंशन सेंटर, आवास, फिल्टर प्लांट और लायन सफारी की सौगात

जीएनएस)। गांधीनगर : 'विकसित गुजरात से विकसित भारत' के मंत्र को चरितार्थ करने के लिए मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल के मार्गदर्शन में राज्य में शहरों के सर्वांगीण विकास के लिए विभिन्न परियोजनाएं तेजी से आगे बढ़ रही हैं। राज्य के महत्वपूर्ण शहर राजकोट में भी आगामी समय में विभिन्न परियोजनाओं के माध्यम से 'ईज ऑफ लिविंग' को बढ़ावा दिया जा रहा है। राजकोट महानगर पालिका की ओर से शहर में आवास, पुल और सड़कों सहित विभिन्न इंफ्रास्ट्रक्चर का निर्माण तेज गति से आगे बढ़ रहा है। इसके चलते आगामी दिनों में राजकोटवासियों को नए स्पोर्ट्स कॉम्प्लेक्स, फिल्टर प्लांट और लायन सफारी पार्क जैसी सुविधाओं की सौगात मिलेगी।

राजकोट को मिलेगी अत्याधुनिक स्पोर्ट्स कॉम्प्लेक्स और किफायती आवास की सुविधाएं

गुजरात सरकार के शहरी विकास वर्ष 2025 के अंतर्गत राजकोट महानगर पालिका की ओर से वार्ड नं. 17 में अंतरराष्ट्रीय स्तर का अत्याधुनिक स्पोर्ट्स कॉम्प्लेक्स तैयार किया जा रहा है। ओलंपिक और कॉमनवेल्थ खेलों को ध्यान में रखते हुए इस स्पोर्ट्स कॉम्प्लेक्स को अंतरराष्ट्रीय स्तर की डिजाइन और सुविधाओं के साथ तैयार किया जा रहा है। इस स्पोर्ट्स कॉम्प्लेक्स के तैयार होने के बाद राजकोट सहित सौराष्ट्र के खिलाड़ियों को उच्च स्तरीय प्रशिक्षण, आधुनिक इंफ्रास्ट्रक्चर और प्रतिस्पर्धी माहौल उपलब्ध होगा।

नागरिकों को किफायती दरों पर आवास उपलब्ध कराने के लिए राजकोट महानगर पालिका की ओर से प्रधानमंत्री आवास योजना के तहत 119 करोड़ रुपए से अधिक की लागत से रेल नगर क्षेत्र में आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग (ईडब्ल्यूएस) – 2 श्रेणी के 1010 आवासों का निर्माण कार्य अपने अंतिम चरण में है। आवास योजना में रूफटॉप सोलर सिस्टम, पानी की लाइन, ड्रेनेज सिस्टम, गैस पाइप लाइन, ऑटो डोर लिफ्ट, वर्षा जल संचयन, ऑटो डीजी जनरेटर सेट्स, फायर टैंक और फुलप्रूफ फायर सिस्टम तथा बच्चों के खेलने के मैदान जैसी सुविधाएं प्रदान की गई हैं। इस आवास योजना को इंटीग्रेटेड इन्क्लूसिव यानी एकीकृत और समावेशी तरीके से प्लान किया गया है, जिसमें आंगनबाड़ी और शॉपिंग सेंटर की सुविधाएं भी उपलब्ध होंगी।

अत्याधुनिक कन्वेंशन सेंटर और स्मार्ट सिटी में अत्याधुनिक वर्किंग विमेन हॉस्टल

राजकोट शहर सौराष्ट्र का औद्योगिक हब भी है। ऑटो इंजीनियरिंग सहित अनेक क्षेत्रों में सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यमों (एमएसएमई) की महत्वपूर्ण भूमिका है। राजकोट में आगामी समय में आधुनिक कन्वेंशन सेंटर के निर्माण के लिए केंद्र और राज्य सरकार की ओर से ग्रांट आवंटित की गई है। स्मार्ट सिटी क्षेत्र में अत्याधुनिक वर्किंग विमेन हॉस्टल का निर्माण किया जाएगा, जिसके लिए 49 करोड़ रुपए की राशि आवंटित की गई है। इस हॉस्टल का निर्माण कार्य अभी प्रगति पर है।

फिल्टर प्लांट और पम्पिंग स्टेशन की सुविधाएं

राजकोट के विस्तार के साथ-साथ शुद्ध पेयजल की उपलब्धता के लिए न्यारा में 50 एमएलडी (दस लाख लीटर प्रतिदिन) क्षमता वाला फिल्टर प्लांट बनाने का आयोजन किया गया है। इसके लिए इस क्षेत्र में 342.72 लाख लीटर क्षमता का अंडरग्राउंड सम्प (भूमिगत भंडारण सुविधा) तथा पम्प हाउस का कार्य जारी है। इसके अलावा, माधापर क्षेत्र में 31.75 करोड़ रुपए के खर्च से 24.19 एमएल (मिलियन लीटर) क्षमता का ग्राउंड सर्विस रिजर्वायर (भूमि पर जल भंडारण के लिए टंकी) और 3 एमएल क्षमता के एलिवेटेड सर्विस रिजर्वायर (ऊंचाई पर पानी की टंकी) की सुविधाएं विकसित की जा रही हैं और पम्पिंग स्टेशन का कार्य जारी है।

लायन सफारी पार्क बनेगा आकर्षण का केंद्र

शहर के पर्यटन विकास और प्राकृतिक पर्यावरण के संरक्षण को ध्यान में रखकर राजकोट महानगर पालिका लायन सफारी पार्क प्रोजेक्ट के काम को तेज गति से आगे बढ़ा रही है। लायन सफारी पार्क प्रोजेक्ट के अंतर्गत अब तक कंपाउंड वॉल (परिसर की दीवार), जानवरों और आगंतुकों की सुरक्षा को ध्यान में रखकर 5 मीटर ऊंची चेन लिंक फेंसिंग दीवार (बाड़) का काम, जानवरों के लिए आवश्यक सुविधाएं मुहैया कराने के उद्देश्य से नाइट शेल्टर, पार्क के अंदरूनी क्षेत्र में आसान आवाजाही के लिए आंतरिक सड़कें बनाने का काम तथा पार्क क्षेत्र के बाहर इंस्पेक्शन रोड का निर्माण भी पूरा कर लिया गया है। आगामी दिनों में लायन सफारी पार्क शहर के लोगों के लिए आकर्षण का एक नया केंद्र बनेगा।

राज्य सरकार ने राजकोट शहर को और अधिक उन्नत बनाने के लिए अविरत प्रयास किए हैं। अटल सरोवर, अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान (एम्स), अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डा और कई फ्लाईओवर सहित विभिन्न विकास परियोजनाओं से राजकोट का कायापलट हुआ है और शहरीजनों की सुख-सुविधा में वृद्धि हुई है। ये सभी विकास कार्य शहरीजनों की खुशहाली बढ़ाने की राज्य सरकार की प्रतिबद्धता को दिखाते हैं।

अहमदाबाद मंडल में दिसंबर 2025 से 19 फरवरी 2026 तक 484 अलार्म चेन पुलिंग की घटनाएँ दर्ज

449 मामलों में केस दर्ज तथा 48700 का वसूला जुर्माना

जीएनएस)। पश्चिम रेलवे के अहमदाबाद मंडल में दिसंबर 2025 से 19 फरवरी 2026 के बीच कुल 484 अलार्म चेन पुलिंग (ACP) की घटनाएँ दर्ज की गईं। इनमें से 449 मामलों में विधिवत केस दर्ज किए गए, जबकि शेष मामलों में प्रारंभिक जांच के उपरांत वैधानिक कारणों से केस दर्ज नहीं किया गया। इन मामलों में कार्रवाई करते हुए रेलवे सुरक्षा बल (RPF) द्वारा 408 व्यक्तियों को गिरफ्तार किया गया तथा 48,700 का जुर्माना लगाया गया।

अहमदाबाद मंडल का रेलवे सुरक्षा बल (RPF) यात्रियों की सुरक्षा, रेलवे संपत्ति की रक्षा तथा स्टेशनों पर सुरक्षित वातावरण बनाए रखने के लिए पूर्ण निष्ठा एवं समर्पण के साथ कार्य कर रहा है। वर्ष 2026 के दौरान अलार्म चेन पुलिंग की घटनाओं पर कड़ी निगरानी रखते हुए RPF ने सतर्कता, त्वरित कार्रवाई एवं प्रभावी समन्वय के माध्यम से उल्लेखनीय नियंत्रण स्थापित किया है, जिससे ट्रेनों की समयपालनता एवं निर्बाध रेल परिचालन सुनिश्चित हो सके।

स्टेशन स्तर पर अहमदाबाद, साबरमती, मणिनगर, महेसाणा, विरामगाम एवं गांधीधाम में अलार्म चेन पुलिंग की घटनाएँ अपेक्षाकृत अधिक दर्ज की गईं। वहीं सेक्शन स्तर पर गेरतपुर–अहमदाबाद, अहमदाबाद–विरामगाम, उंझा–पालनपुर, सामाख्याली–भुज तथा अहमदाबाद–साबरमती खंडों में अधिक घटनाएँ सामने आईं, जहाँ RPF द्वारा अतिरिक्त निगरानी एवं विशेष अभियान चलाए गए।

अलार्म चेन पुलिंग के प्रमुख कारणों में गलत ट्रेन या कोच में चढ़ जाना, सामान छूट जाना अथवा सहयात्री के छूट जाने जैसी परिस्थितियाँ प्रमुख रूप से पाई गईं। इन कारणों को दृष्टिगत रखते हुए RPF द्वारा यात्रियों को जागरूक करने हेतु नियमित अभियान चलाए जा रहे हैं तथा रेलवे कर्मचारियों के साथ बेहतर समन्वय स्थापित किया गया है। इसके अतिरिक्त आश्रम एक्सप्रेस, कच्छ एक्सप्रेस, अला हज़रत एक्सप्रेस, अरावली एक्सप्रेस एवं लोकशक्ति एक्सप्रेस जैसी कुछ ट्रेनों में अलार्म चेन पुलिंग की घटनाएँ अपेक्षाकृत अधिक पाई गईं, जिन पर विशेष निगरानी रखी जा रही है। रेल प्रशासन एवं RPF यात्रियों से अपील करता है कि अलार्म चेन का उपयोग केवल आपात स्थिति में ही करें। अनावश्यक अलार्म चेन पुलिंग न केवल ट्रेन परिचालन को बाधित करता है, बल्कि अन्य यात्रियों की सुरक्षा एवं सुविधा को भी प्रभावित करता है।

ओपीडी समय परिवर्तन से मण्डल रेलवे अस्पताल भावनगर में नई ऊर्जा, कर्मचारियों एवं मरीजों में खुशी की लहर

जीएनएस)। रेलवे बोर्ड (भारत) के निर्देशानुसार पश्चिम रेलवे के अंतर्गत मण्डल रेलवे अस्पताल, भावनगर में ओपीडी समय-सारणी में किया गया हालिया परिवर्तन मरीजों एवं कर्मचारियों की सुविधा को केंद्र में रखकर उठाया गया एक महत्वपूर्ण एवं जनहितकारी कदम साबित हो रहा है। इस सुधार से अस्पताल की स्वास्थ्य सेवाओं में कार्यकुशलता, समय प्रबंधन तथा मरीज संतुष्टि में उल्लेखनीय वृद्धि देखने को मिल रही है।

पूर्व में अस्पताल की ओपीडी सेवाएँ प्रातः 09:00 बजे से 01:00 बजे तक तथा सायं 04:00 बजे से 06:00 बजे तक संचालित होती थीं। दोपहर के लगभग तीन घंटे के अंतराल के कारण दूर-दराज से आने वाले मरीजों एवं रेलवे कर्मचारियों को अनावश्यक प्रतीक्षा का सामना करना पड़ता था। परिवहन सुविधाओं की सीमित उपलब्धता के कारण कई बार कर्मचारियों तथा उनके आश्रितों को शाम तक रुकना अथवा अगले दिन तक ठहरना पड़ता था, जिससे समय एवं संसाधनों की हानि के साथ असुविधा भी होती थी।

नई समय-सारणी के अनुसार अब ओपीडी सेवाएँ प्रातः 09:00 बजे से 01:00 बजे तक तथा दोपहर 02:00 बजे से 04:00 बजे तक निरंतर संचालित की जा रही हैं।

इस सुव्यवस्थित व्यवस्था से मरीजों को समय पर चिकित्सकीय परामर्श, आवश्यक जांच तथा दवा वितरण की सुविधा सहज रूप से उपलब्ध हो रही है। मरीज अब 04:00 बजे तक अपनी चिकित्सा प्रक्रिया पूर्ण कर अपने गंतव्य स्थानों के लिए सुविधाजनक रूप से प्रस्थान कर पा रहे हैं। इस सकारात्मक परिवर्तन से अस्पताल परिसर में नई ऊर्जा और उत्साह का वातावरण बना है। कर्मचारियों में संतोष एवं प्रेरणा की भावना देखने को मिल रही है, वहीं मरीजों एवं उनके परिजनों ने भी इस पहल की खुले दिल से सराहना की है। यह सुधार अस्पताल प्रशासन की सेवा-भावना, संवेदनशील दृष्टिकोण तथा बेहतर स्वास्थ्य सेवाएँ प्रदान करने की प्रतिबद्धता को स्पष्ट रूप से दर्शाता है।

ओपीडी समय में किया गया यह परिवर्तन न केवल प्रभावी समय प्रबंधन का उत्कृष्ट उदाहरण है, बल्कि "मरीज पहले" की भावना को सशक्त रूप से अभिव्यक्त करते हुए रेलवे स्वास्थ्य सेवाओं को अधिक सुलभ, सुव्यवस्थित एवं जनकेंद्रित बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।

कांग्रेस पार्टी द्वारा 'एआई समिट' के दौरान विरोध प्रदर्शन करने पर मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल की प्रतिक्रिया

जीएनएस)। गांधीनगर : मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने कहा कि विश्व नेता प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के मार्गदर्शन और नेतृत्व में 'एआई इम्पैक्ट समिट' की शानदार सफलता के जरिए दुनिया ने एक नए भारत का उदय देखा है।

उन्होंने कहा कि भारत के युवाओं के सपनों को एक नई ऊंचाई मिली है। इस पहल से स्टार्टअप्स और इमर्जिंग सेक्टर में युवाओं के लिए अपार अवसरों का निर्माण हुआ है।

इस उपलब्धि और इस समिट से वैश्विक स्तर पर उभर रही भारत की छवि को स्वीकार न कर पाने वाले लोग इसका विरोध कर रहे हैं।

श्री पटेल ने कहा कि कांग्रेस ने भाजपा का विरोध करते-करते भारत का विरोध करने की राह अपना ली है। कांग्रेस यह विरोध करके अपनी मानसिक अस्थिरता का परिचय दे रही है।

उन्होंने कहा कि जब-जब दुनिया में भारत का डंका बजता है, तब उसका विरोध करना कांग्रेस की पुरानी आदत है।

अब, जब देश की युवा शक्ति के लिए विकास के नए अवसर खुले हैं, तब उन युवाओं के मन में भी शंकाएं पैदा करने और केवल सस्ता प्रचार प्राप्त करने के उद्देश्य से वे 'एआई समिट' का भी विरोध कर रहे हैं।

कांग्रेस को अपनी इस करतूत पर शर्म आनी चाहिए और उसे इसके लिए देश से माफी मांगनी चाहिए।

यात्रियों की सुविधा हेतु भावनगर मंडल के मीटरगेज सेक्शन में 23 फरवरी से जूनागढ़ चलाला के बीच चलेगी दैनिक स्पेशल ट्रेन

जीएनएस)। यात्रियों की सुविधा एवं उनकी मांग को ध्यान में रखते हुए पश्चिम रेलवे द्वारा भावनगर रेलवे मंडल के मीटरगेज सेक्शन में विशेष किराये पर जूनागढ़-चलाला स्टेशनों के बीच 23 फरवरी, 2026 (सोमवार) से दैनिक स्पेशल ट्रेन चलाने का निर्णय लिया गया है। भावनगर मंडल के वरिष्ठ मंडल वाणिज्य प्रबंधक श्री अतुल कुमार त्रिपाठी के अनुसार ट्रेन का विवरण निम्नानुसार है:

जूनागढ़ से चलाला को जाने वाली दैनिक मीटरगेज स्पेशल ट्रेन जूनागढ़ स्टेशन से सुबह 10.40 बजे प्रस्थान करेगी तथा यह ट्रेन दोपहर 14.10 बजे चलाला स्टेशन पहुंचेगी।

वापसी में चलाला से जूनागढ़ को जाने वाली दैनिक मीटरगेज स्पेशल ट्रेन चलाला से दोपहर 14.40 बजे प्रस्थान करेगी तथा 17.35 बजे जूनागढ़ स्टेशन पहुंचेगी।

यह ट्रेन मार्ग में तोरणीया, बीलखा, जुनी चावंड, वीसावदर, जेतलवड, भाडेर और धारी स्टेशनों पर दोनों दिशाओं में रूकेगी।

मंडल रेल प्रबंधक श्री दिनेश वर्मा ने यात्रियों से अनुरोध किया है कि वे इस ट्रेन का अधिक से अधिक लाभ लें।

मेल/एक्सप्रेस ट्रेनों में सामान्य श्रेणी (जनरल) कोचों की स्थायी वृद्धि, यात्रियों को मिलेगी अतिरिक्त सुविधा

जीएनएस)। यात्रियों की सुविधा एवं रेलवे बोर्ड के दिशा-निर्देशों के अनुरूप प्रत्येक मेल/एक्सप्रेस ट्रेन में न्यूनतम 04 सामान्य श्रेणी कोच उपलब्ध कराने के उद्देश्य से पश्चिम रेलवे द्वारा भावनगर मंडल से होकर चलने वाली ट्रेनों की संरचना में स्थायी रूप से सामान्य श्रेणी कोचों की वृद्धि को स्वीकृति प्रदान की गई है। इस निर्णय से सामान्य श्रेणी में यात्रा करने वाले यात्रियों को अतिरिक्त स्थान उपलब्ध होगा तथा भीड़ प्रबंधन में भी सहायता मिलेगी।

भावनगर मंडल के वरिष्ठ मंडल वाणिज्य प्रबंधक श्री अतुल कुमार त्रिपाठी के अनुसार संशोधित कोच संरचना का विवरण निम्नानुसार है —

1. गाड़ी संख्या 12905/12906 पोरबंदर–शालीमार–पोरबंदर एक्सप्रेस संशोधित संरचना के अनुसार जनरल कोचों की संख्या 3 से बढ़ाकर 4 किए जाएंगे। ये कोच पोरबंदर से 29 अप्रैल 2026 से तथा शालीमार से 01 मई 2026 से प्रभावी होंगे।

2. गाड़ी संख्या 20968/20967 पोरबंदर–सिकंदराबाद–पोरबंदर एक्सप्रेस ट्रेन संरचना में संशोधन कर सामान्य श्रेणी कोचों की संख्या 3 से बढ़ाकर 4 की जाएगी। ये कोच पोरबंदर से 28 अप्रैल 2026 से तथा सिकंदराबाद से 29 अप्रैल 2026 से प्रभावी होंगे।

3. गाड़ी संख्या 12949/12950 पोरबंदर–सांतरागाछी–पोरबंदर एक्सप्रेस संशोधित संरचना के अनुसार सामान्य श्रेणी कोचों की संख्या 2 से बढ़ाकर 4 किए जाएंगे। ये कोच पोरबंदर से 01 मई 2026 से तथा सांतरागाछी से 03 मई 2026 से प्रभावी होंगे।

रेल प्रशासन यात्रियों से अनुरोध करता है कि यात्रा के दौरान उपलब्ध सुविधाओं का लाभ उठाते हुए सुरक्षित एवं आरामदायक यात्रा सुनिश्चित करें।

डायमंड सिटी से ग्लोबल हब तक: सूरत का निर्यात 10.55 अरब डॉलर, अमेरिका, हांगकांग और यूएई प्रमुख बाजार

जीएनएस)। गांधीनगर : भारत की निर्यात आधारित विकास रणनीति को नई गति मिल रही है और इस दिशा में गुजरात एक बार फिर अग्रणी राज्य के रूप में उभरा है। वित्तीय वर्ष 2024-25 में गुजरात ने 9.83 लाख करोड़ रुपये के निर्यात के साथ राष्ट्रीय स्तर पर शीर्ष स्थान बरकरार रखा, जो देश के कुल निर्यात का 27 प्रतिशत से अधिक है।

इस उपलब्धि में सूरत की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण रही है। 'डायमंड सिटी' के रूप में वैश्विक पहचान रखने वाले सूरत ने वित्तीय वर्ष 2024-25 में 10.55 अरब अमेरिकी डॉलर का निर्यात दर्ज कर अपनी आर्थिक क्षमता का सशक्त प्रदर्शन किया है।

सूरत का निर्यात मुख्य रूप से रत्न एवं आभूषण क्षेत्र पर आधारित है। सूरत क्षेत्र में विश्व के लगभग 90 प्रतिशत हीरों का प्रसंस्करण होता है और यह कुल निर्यात में लगभग 70 प्रतिशत हिस्सेदारी रखता है। हालांकि, सूरत की अर्थव्यवस्था अब हीरा उद्योग तक सीमित नहीं रही। मानव-निर्मित रेशे, जैविक रसायन, यांत्रिक मशीनरी तथा विविध वस्त्र

निर्माण जैसे क्षेत्र तेजी से उभर रहे हैं, जिससे शहर का औद्योगिक आधार और व्यापक हुआ है।

वैश्विक बाजारों में भी सूरत की मजबूत पकड़ बनी हुई है। संयुक्त राज्य अमेरिका 32 प्रतिशत हिस्सेदारी के साथ सूरत का सबसे बड़ा निर्यात गंतव्य बना हुआ है। हांगकांग (18 प्रतिशत) और संयुक्त अरब अमीरात (14 प्रतिशत) भी प्रमुख व्यापारिक केंद्र हैं। इसके अलावा बेल्जियम और इज़राइल जैसे स्थापित बाजारों के साथ-साथ सऊदी अरब और थाईलैंड जैसे उभरते देशों में भी सूरत की पहुंच लगातार बढ़ रही है।

इसी पृष्ठभूमि में अप्रैल 2026 में सूरत में आयोजित होने वाली वाइब्रेंट गुजरात रीजनल कॉन्फ्रेंस (वीजीआरसी) दक्षिण गुजरात को वैश्विक निर्यात केंद्र के रूप में स्थापित करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम मानी जा रही है। यह सम्मेलन भरूच, डांग, नवसारी, सूरत, तापी और वलसाड जिलों को आच्छादित करेगा तथा रसायन एवं पेट्रोकेमिकल, वस्त्र एवं परिधान, रत्न एवं आभूषण, फार्मास्यूटिकल्स तथा कृषि एवं खाद्य प्रसंस्करण जैसे उच्च-विकास क्षेत्रों को प्रमुखता से प्रदर्शित करेगा।

विशेषज्ञों के अनुसार, हाल में संपन्न भारत-यूरोपीय संघ मुक्त व्यापार समझौते और भारत-अमेरिका व्यापार समझौते के परिप्रेक्ष्य में यह सम्मेलन दक्षिण गुजरात के निर्यातकों और निवेशकों के लिए नए अवसरों के द्वार खोल सकता है।

'विकसित भारत@2047' और 'विकसित गुजरात@2047' की परिकल्पना के अनुरूप, यह सम्मेलन स्थानीय एमएसएमई को वैश्विक बाजारों से जोड़ने और 'वोकल फॉर लोकल' से 'लोकल फॉर ग्लोबल' की दिशा में ठोस पहल को गति देने वाला मंच सिद्ध हो सकता है।

पश्चिम रेलवे ने फिल्म शूटिंग से अर्जित की ₹1.72 करोड़ की रिकॉर्ड आय

जीएनएस)। यात्रियों और माल परिवहन से होने वाली आय को बढ़ाने के साथ-साथ पश्चिम रेलवे गैर-किराया राजस्व बढ़ाने के लिए कई नवाचारी पहल कर रहा है। इसी दिशा में पश्चिम रेलवे ने वर्ष 2025–26 के दौरान फिल्म शूटिंग से आय अर्जित करने में एक नया कीर्तिमान स्थापित किया है। इस अवधि में 15 फरवरी, 2026 तक पश्चिम रेलवे ने फिल्म शूटिंग से अब तक की सर्वाधिक लगभग 1.72 करोड़ की आय अर्जित की है, जो पिछले वर्ष की तुलना में लगभग 25% अधिक है। इससे पहले वर्ष 2022–23 में पश्चिम रेलवे ने फिल्म शूटिंग से लगभग 1.64 करोड़ की आय अर्जित की थी। यह इस क्षेत्र में निरंतर वृद्धि को दर्शाता है तथा इस प्रकार की आय अर्जित करने में पश्चिम रेलवे को देश के अग्रणी रेलवे जोनों में स्थान दिलाता है।

पश्चिम रेलवे के मुख्य जनसंपर्क अधिकारी श्री विनीत अभिषेक द्वारा जारी एक प्रेस विज्ञप्ति के अनुसार, पश्चिम रेलवे के अंतर्गत विभिन्न स्टेशनों, ट्रेनों और रेलवे परिसरों को फिल्मों, टेलीविजन धारावाहिकों, वेब सीरीज तथा विज्ञापन फिल्मों की शूटिंग के लिए उपलब्ध कराया जाता है। समय-समय पर मेल/एक्सप्रेस ट्रेनों के साथ-साथ उपनगरीय लोकल ट्रेनों में भी शूटिंग की अनुमति प्रदान की जाती है। इसके अतिरिक्त रेलवे स्टेशन, प्लेटफॉर्म, यार्ड तथा अन्य रेलवे परिसरों को भी शूटिंग के लिए उपलब्ध कराया जाता है, जिससे फिल्म निर्माताओं को वास्तविक और जीवंत लोकेशन मिलती है।

पश्चिम रेलवे ने शूटिंग अनुमति प्रदान करने की प्रक्रिया को सरल और सुव्यवस्थित किया है, जिससे प्रोडक्शन हाउस और फिल्म निर्माताओं को निर्धारित समय में आवश्यक स्वीकृतियाँ प्राप्त करना आसान हो गया है। अब सिंगल विंडो प्रणाली के माध्यम से प्रोडक्शन हाउस को केवल शूटिंग के लिए आवेदन करना होता है तथा अन्य सभी रेलवे स्वीकृतियाँ जनसंपर्क विभाग द्वारा प्राप्त कर अनुमति जारी की जाती है। साथ ही, ऐसी शूटिंग गतिविधियों के दौरान सुरक्षा, परिचालन आवश्यकताओं और यात्रियों की सुविधा को सर्वोच्च प्राथमिकता दी जाती है।

यह उल्लेखनीय है कि पहली बार भारत की सबसे आधुनिक और प्रीमियम ट्रेन वंदे भारत एक्सप्रेस के अंदर फिल्म शूटिंग की अनुमति पश्चिम रेलवे द्वारा प्रदान की गई। इस उपलब्धि से फिल्म उद्योग को विश्वस्तरीय रेल वे अवसंरचना का उपयोग करने का अवसर मिला तथा पश्चिम रेलवे के प्रगतिशील और नवाचारी दृष्टिकोण को भी प्रदर्शित किया गया।

पश्चिम रेलवे के विभिन्न स्थानों पर जिन फिल्मों की शूटिंग की गई, उनमें ओ रोमियो, फतेह, तेरा यार हूँ मैं, सिकंदर तथा लिजोल, पेटीएम, कोलगेट जैसे अनेक विज्ञापन शामिल हैं।

पश्चिम रेलवे भविष्य में भी फिल्म उद्योग के साथ समन्वय को और सुदृढ़ करने, नए अवसर सृजित करने तथा गैर-किराया राजस्व में वृद्धि करने के लिए प्रतिबद्ध है।